A Monthly Book of Self Progress Churning Points

From Baba's Everyday Murlis

October 2014

In Remembrance of our most beloved Baba

- Atma Bhai

a.brahmin.soul@gmail.com

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 01-10-14

हम आत्माओं को याद की यात्रा सिखलाकर मास्टर सर्व-शक्तिवान बनाने वाले, सर्व शक्तिमान बाप ने कहा, मीठे बच्चे - सर्वशक्तिमान बाप आया है तुम्हें शक्ति देने, जितना याद में रहेंगे उतनी शक्ति मिलती रहेगी.

यह तो हम सब ने अनुभव किया होगा की जब हम स्वयं को आत्मा समझकर बाप की याद में बैठते हैं तो बाबा से हमें लाइट (ज्योत) और माईट (शक्ति) मिलती हैं. हमारी आत्मा जब परमधाम में बाबा के साथ है तो वहाँ हमारी आत्मा की बैटरी फूल चार्ज रहती हैं. फिर सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग ऐसे ८४ जन्मो का पार्ट बजाकर कलियुग के अन्त में हमारी आत्मा की लाईट और माईट बहुत कम हो जाती हैं. अभी संगम पर परमात्मा आकर हमारी आत्मा की बैटरी को फिरसे चार्ज करते हैं.

आत्मा की बैटरी जैसे-जैसे चार्ज होती है उतनी आत्मा में लाइट और माईट भरती जाती हैं. आत्मा में लाईट आने से हमारे शरीर को भी जैसे नवजीवन मिलता है और हमारा मुखारबिंद पर एक अलौकिक चमक आती हैं. आत्मा में माईट (शक्ति) आने से आत्मा ईश्वरीय श्रीमत् को एक्युरेंट धारण करने में सक्षम बनती हैं.

बाबा से योग में लाईट और माईट भरने की विधि -

जब हम बाबा की याद में बैठते हैं तो सबसे पहले हमें अपनी आत्मिक स्थिति बनानी है और सब संकल्प मर्ज कर देने हैं. बाद में बड़े प्यार से बाबा को याद करना हैं.

1. अंतर्मुखी अवस्था बनाना - इससे हमारी आत्मिक अवस्था बनाने में मदद मिलेगी.

चिंतन - अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए बाबा ने हमें कहा, पहले अपना धर तो संभालो. हमें अपनी दिव्य बुद्धि का उपयोग कर मन और संस्कार को ही चेक करना हैं. चेक करो मेरा मन अभी भी व्यर्थ चिंतन, परचिंतन या परदर्शन में तो नहीं रहता. चेक करो की मेरे में क्या गुण और अवगुण हैं. अंतर्मुखी अवस्था जमाने के लिए एकाग्रता की शक्ति को हमारे

में डेवलप (develop) करना आवश्यक हैं. एकाग्रता की शक्ति से ही हम अपनी शारीरिक कर्मेन्द्रियां और सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों पर क़ाबू पा सकते हैं.

2. सबसे ममत्व मिटाए एक की याद रखो - इससे व्यर्थ संकल्प समाप्त हो जायेंगे.

चिंतन - अब हमें पुराना शरीर, पुराने संबंध, पुराने साधन ओर पुरानी दुनिया से ममत्व निकाल देना हैं. हम जीवात्माओं ने इस बेहद के ड्रामा में पार्ट बजाते, पिछले 83 जन्मो से अन्य जीवात्माओं से ही सम्बन्ध रखे और इसके फल स्वरूप हम नीचे ही गिरते आये, अब हमें सबसे ममत्व निकाल, एक विदेही (जिसको अपना शरीर नहीं हैं) बाप से ही सर्व सम्बन्ध का अनुभव करना हैं. लेकिन विदेही बाप से सर्व सम्बन्ध का अनुभव हम तब कर पायेंगे जब हम अपने खुद के शरीर से भी मोह निकाल दे और स्वयं के सत्य स्वरूप, आत्मिक स्वरूप में रहने का अभ्यास करें और एक विदेही बाप से सर्व सम्बन्धों का रस ले.

3. बड़े प्यार से बाबा को याद करो. - इससे लंबे काल के लिए एक बाप की याद में रहकर योग कर पायेंगे.

मनन --

- मेरे बाबा - मीठे बाबा - प्यारे बाबा

- मेरे बाबा, आप तो सर्वशक्तिमान हों. हम आपके बच्चे आपसे शक्ति भर के मास्टर सर्वशक्तिवान बन रहे हैं.

- मेरे बाबा, आप तो पवित्रता के सागर हों. हम आपसे पवित्रता की शक्ति भर के सोले कला सम्पूर्ण आत्मा बन रहे हैं.

- मेरे बाबा, आप तो दिव्य-गुणों के भंडार हों. हम आपसे दिव्य-गुण लेकर सर्व-गुण समप्पन आत्मा बन रहे हैं.

अन्त में बाबा का शुक्रिया करना न भूले. शुक्रिया बाबा आपका पदमापदम शुक्रिया.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 02-10-14

अपने ज्ञान से हम ब्राह्मणों का जीवन स्वच्छ और सादगी से भरपूर बनाने वाले, बेहद के ज्ञान सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - सतगुरु की पहली-पहली श्रीमत् है देही-अभिमानी बनो, देह-अभिमान छोड़ दो.

बाबा ने हमें ज्ञान का पहला पाठ पढ़ाया हैं - मीठे बच्चे, खुद को आत्मा समझो, मतलब की देही-अभिमानी (आत्म-अभिमानी) बनो. बाबा हमें देही-अभिमानी बनने का अभ्यास इसलिए करवाते है क्योंकि सतयुग के देवी-देवताये नेचरल रुप से देही-अभिमानी होते हैं. अभी हमारी जीवात्मा, देही-अभिमानी बनकर पार्ट बजाने का पुरुषार्थ कर रही हैं. फिर हमारी आत्मा जब शरीर का त्याग करती है तो साथ में यह देही-अभिमानी के संस्कार ले जाती हैं. जो उसे सतयुग-त्रेता में नेचरल रूप से देही-अभिमानी बना देता हैं.

यह तो हम सब जानते है की अभी हम रावण राज्य में है तो यहॉ सब आत्माये एवम् प्रकृति के पांचों तत्व भी सम्पूर्ण विकारी हैं. इस समय समग्र विश्व की सर्व आत्माओं और प्रकृति के पांचों तत्वों पर माया-रावण का ही राज हैं. बाबा हमें यह सबसे वैराग्य भी इसलिए दिलाते है क्योंकि अगर हमने यहॉ की कुछ भी चीज में अपना मन लगाया तो माया हमें देही-अभिमानी बनने नहीं देगी और हमारी हार हो जायेंगी. यही हमारी आत्मा और माया के बीच में चल रहा महासंग्राम हैं. जिसे महाभारत का युद्ध भी कहते है जहॉ एक तरफ हमारी आत्मा, स्वयं भगवान का साथ लेकर, अभी समग्र विश्व पर राज करने वाली माया से युद्ध कर रही हैं.

आज बाबा ने हमें अपने कपडे भी बहुत सादगी वाले पहनने को कहा है क्योंकि अगर हम फेशनेबल कपडे पहनेंगे और ज्यादा शरीर का श्रृंगार करेंगे तो हो सकता है माया अपना चान्स लेकर हमें ऊपर शिखर से भी गिरा सकती हैं. इसलिए हमारा ब्राह्मण जीवन हमेशा सादगी और स्वच्छता से भरपूर रखना ही हैं.

फिर सतयुग में तो हमें बहुत अच्छे चमकदार कपड़े पहनने को मिलेंगे. सतयुग में माया-रावण नहीं है इसलिए सतयुग के सर्व सुख भोगते भी वहॉ हम नेचरल रूप से देही-अभिमानी होकर रहेंगे, वहॉ कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ेगा.

- देही-अभिमानी अवस्था बनाने की ड्रिल -

सबसे पहले देही-अभिमानी अवस्था बनाने के लिए एकाग्रता कि शक्ति का उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनानी हैं.

एकाग्रता कि शक्ति का उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए नीचे दिये हुए स्वमानो को उपयोग कर, स्वयं को एक ज्योति स्टार स्वरूप आत्मा के रुप में फील (feel) करें यानी बिजरुप अवस्था में रहने का अभ्यास बढ़ाये.

ध्यान में रहे कि इस स्वमानो का उपयोग करने से पहले, हमें अपने सब संकल्पों को मर्ज कर देना हैं.

में आत्मा हूं. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूं.

में आत्मा हूं. शांत और पवित्र स्वरूप हूं. शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

में आत्मा हूं. सत्य हूं. चैतन्य हूं. आनंद स्वरूप हूं.

में आत्मा हूं. अजड, अमर, अविनाशी हूं.

में आत्मा हूं. चैतन्य शक्ति हूं. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूं.

में आत्मा हूं. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 03-10-14

आत्मा और परमात्मा का ऐक्युरेंट ज्ञान और योग सिखलाकर, हम आत्मा को विकारों से मुक्त होने का रास्ता बताने वाले, शिवबाबा ने कहा, "मीठे बच्चे – आत्मा से विकारों का किचड़ा निकाल शुद्ध फूल बनो. बाप की याद से ही सारा किचड़ा निकलेगा.

बाबा ने आज सारी मुरली में हमें आत्मा, परमात्मा और योग का ज्ञान दिया हैं. यह तो हम जानते है की यह ईश्वरीय ज्ञान है समझकर धारण करने के लिए हैं. अगर हम ज्ञान को बहुत अच्छा समझते है पर धारणा कुछ नहीं तो फिर हम कलियुग के पंडित बन जाते हैं. इस ज्ञान को अपने में सहज रुप से धारण कर सके इसलिए बाबा ने जो भी पॉइन्टस आत्मा-परमात्मा के बारे में और योग के बारे में बताये है उसे अलग से लिखकर स्वयं की आत्मिक स्थिति बनाने की और आत्मिक स्थिति में रहकर बाबा से योग करने की प्रैक्टिस कर सकते हैं.

आत्मिक स्थिति में रहकर नीचे बताये हुए महावाक्यों को पढ़े. इसे हमारी आत्म-अभिमानी स्थिति बनाने में मदद मिलेगी.

- बाबा कहते है, तुम्हारी यह जो छोटी सी आत्मा है उन पर कितना मैल चड़ा हुआ हैं. मैल चड़ने से कितना घाटा पड़ जाता है. यह फायदा और घाटा तब देखने में आता है जब की शरीर के साथ हैं. तुम जानते हो हम आत्मा जब पवित्र बनेंगी तब यह लक्ष्मी-नारायण जैसा पवित्र शरीर मिलेगा.

- बाबा कहते है, तुम्हारी आत्मा ही कंचन थी, बिल्कुल पवित्र थी. तो शरीर भी कितना सुन्दर था. इन लक्ष्मी-नारायण का शरीर देखो कितना सुन्दर हैं.

- बाबा कहते है, मनुष्य तो शरीर को ही पूंजते हैं ना. आत्मा की तरफ नहीं देखते. आत्मा की तो पहचान ही नहीं हैं. पहले तुम्हारी आत्मा भी सुन्दर थी तो चोला भी सुन्दर था. तुम भी अभी यह लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना चाहते हो तो आत्मा कितनी शुद्ध होनी चाहिए.

- बाबा कहते है, आत्मा को ही तमोप्रधान कहा जाता है क्योंकि उनमें फुल किचड़ा है. तुम अच्छी रीति बैठ विचार करेंगे तो फील होगा बहुत किचड़ा भरा हुआ है. आत्मा में ही रावण की प्रवेशता है. अभी बाप की याद में रहने से ही किचड़ा निकलता हैं.

- बाबा कहते है, तुमको तो सब खामियां निकाल बिल्कुल पवित्र बनना है ना. यह लक्ष्मी-नारायण कितने पवित्र हैं.

- बाबा कहते है, आत्मा कितनी छोटी बिन्दी हैं. फिर जब आत्मा शरीर में प्रवेश करती है तो शरीर बड़ा होता हैं. आत्मा तो छोटी-बड़ी नहीं होती हैं.

आत्मिक स्थिति में रहकर बाप को याद करें और नीचे बताये हुए महावाक्यों को पढ़े.

- शिवबाबा तो बहुत पवित्र हैं. हम आत्माये क्या से क्या बन जाती हैं. अब बाप समझाते ही है तुमने मुझे बुलाया ही है आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए.

- शिवबाबा तो बागवान भी हैं. हम आत्माये कितनी मैली एकदम कांटा बन गई थी. अब बाप की याद से हमारी आत्मा एकदम फस्टक्लास फुल, पवित्र बनती जाती हैं.

- शिवबाबा की याद से जैसे-जैसे हमारी आत्मा पवित्र बनती जाती है फिर तो कोई की शक्ल देखने का भी दिल नहीं होता हैं. अब हमें अपवित्र को देखना ही नहीं हैं.

- शिवबाबा है ही एवरप्योर. हम आत्माये बाबा के पास आये है पवित्र बनने के लिए.

- शिवबाबा ही हमें ऐसा लक्ष्मी-नारायण जैसा बनाते है तो हमें भी एक बाप की याद में रहकर ही शरीर छोड़ना हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 04-10-14

अपने ज्ञान से हम आत्माओं को रंक से राजा बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, "मीठे बच्चे - बाप की याद के साथ-साथ ज्ञान धन से भी सम्पन्न बनो, बुद्धि में सारा ज्ञान घूमता रहे तब अपार खुशी रहेगी. इस सृष्टि चक्र के ज्ञान से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे."

बाबा अभी हमें तीन मुख्य बातों का ज्ञान देते हैं - आत्मा का, परमात्मा का और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान.

इसमें आत्मा का और परमात्मा का ज्ञान उपयोग कर, हम आत्माये बाबा को याद करते है जिसे हम आत्माये पतित से पावन बनती हैं. यह भी हम जानते है कि पावन आत्माये ही अपने घर-परमधाम जा सकेगी. अभी पुरुषार्थ कर पावन बनी हुई आत्माये ही दिव्य-गुणों और शक्तिओ से भरपूर बनती हैं. फिर बाबा हमें सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान इसलिए देते है जिसे हम बाप से मिलने वाले वर्से को याद करें और स्वदर्शन चक्रधारी बने. जब हम बाप से मिलने वाले वर्से को याद करते है तो दिल में होता है की हमें लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना हैं तो फिर देवी-गुणों को भी धारण करना चाहिए.

अभी हम आत्माये बाप की याद से पतित से पावन बनने का और सृष्टि चक्र के ज्ञान से हम आत्माये देवी-गुणों को धारण करने का पुरुषार्थ करते हैं.

आज की मुरली से हम बाप की याद और वर्से के पाईन्टस को निकाल कर, दोनों को याद करने का पुरुषार्थ करेंगे.

बाबा की याद के कुछ पॉइन्टस -----

- रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों से पुछते है - रुहानी बच्चे याद की यात्रा में बैठे हुए हो? तुम्हें अन्दर में यह ज्ञान है कि हम आत्मायें याद की यात्रा पर हैं.
- बाप समझाते है जैसे भक्ति में हरिद्वार, अमरनाथ की यात्रा पर जाते हो. यहॉ फिर तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम जाते है शान्तिधाम.
- बाबा ने तुम्हारा हाथ पकड़ा है. बाबा अब तुम्हें पार ले जाते हैं इस विषय सागर से.

- अब तुम शिवबाबा को याद करो और घर को याद करो. अन्दर में है कि अब हम घर जा रहे हैं.

- मुख से कुछ भी बोलना नहीं हैं. अन्दर में सिर्फ याद रहे - बाबा आया हुआ है घर ले जाने के लिए. इस याद की यात्रा पर जरूर रहना हैं. इस याद की यात्रा से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे फिर बहुत ऊँची मंजिल पर पहुँचेंगे.

- बाबा कहते है - सदैव तुम्हारी बुद्धि में हो कि हम बाबा को याद करते जा रहे हैं. बाबा आते ही हैं हमें पतित से पावन बनाकर घर ले जाने.

- अब हमें निश्चय है कि हम आत्माओं को बाप को याद कर घर जाना हैं.

- हम आत्माये जानती है, हम आत्माओं का वह स्वीट घर है. बाबा को याद करते-करते हमें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना हैं. हम बाप कि याद में बैठते ही हैं इसलिए कि बाबा के साथ ही घर चले जायें.

<u>बर्से को याद करने के लिए कुछ पॉइन्टस</u> ----

- बाप आते ही है हम आत्माओं को पावन बनाने. हमें पावन बनकर फिर पावन दुनिया में जाना ही हैं.

- हमें यह ज्ञान है कि बाप हमें पावन बनाते है फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पावन दुनिया में आयेंगे.

- बाबा हमें रास्ता बताते है इस मृत्युलोक से निकल कर अमरलोक में जानेका. बाबा हमें अमरलोक के लायक भी बनाते हैं.

- बाबा ने हमें इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान दिया हैं. बाबा कहते है - इस ज्ञान से हम चक्रवर्ती राजा बनते हैं.

- अब सारा ८४ जन्मो का चक्र हमारी बुद्धि में हैं. अब हमने यह चक्र पुरा किया. फिर हम घर जायेंगे फिर नयेसिर चक्र शुरू होगा.

- बाबा अब हमारे लिए नई दुनिया बना रहे हैं, जिसको अमरलोक कहा जाता हैं. वहॉ काल होता नहीं, इसलिए किसी की भी अकाले मृत्यु नहीं होगी. वहॉ रावण भी नहीं होता, इसलिए हम सदा निर्विकारी होकर रहेंगे.

इस तरह से हर मुरली से हमें बाप कि याद और वर्से के पॉइन्टस निकाल कर याद की यात्रा पर रहना ही हैं. ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 05-10-14

आज बापदादा हम भाग्यशाली आत्माओं को एक ही समय में चार रूप में देख रहे हैं. हम आत्माओं के चार स्वरूप हमारे अभी के पार्ट के आधार पर बनते हैं. यह चार स्वरूप है - शिववंशी, ब्रह्मावंशी, देवता वंशी और इष्ट वंशी. इसमें पहले दो वंशी तो सब आत्माये बनती है लेकिन तीसरे और चोथा हमारे अभी के पुरुषार्थ के आधार से नम्बरवार बनते हैं.

देव वंशी को राज वंशी भी कहा जाता हैं और इष्ट वंशी को पूज्य वंशी भी कहा जाता हैं. बापदादा ने कहा, जैसे राज वंशी में नम्बरवार होता हैं वैसे पूज्य वंशी में भी नम्बरवार होते हैं. इसलिए भक्ति में भी कोई-कोई इष्ट देवी-देवताओं की पूजा हर रोज होती हैं, किसी की कभी-कभी और किसी की तो साल में एक बार.

अब हमारी पूजा भक्त हर रोज करें इसलिए हमारे में जो भी विशेषतायें होनी चाहिए वह भी बाबदादा ने आज बताई हैं. तो आज हम सब अपने में चेक करें की यह सब विशेषतायें मेरे में कहा तक आई हैं.

हमारे में ऊँच इष्ट देवी-देवता बनने की कोन सी विशेषतायें होनी चाहिए?

१. इष्ट देव आत्मा सदा रहमदिल होगी. हर आत्माको भटकने वा भिखारीपन से बचाने का. हरेक के ऊपर रहम करेगा. निष्काम रहमदिल होगा. बेहद के रूप में रहमदिल होगा. उनके रहम के संकल्प से अन्य आत्माओं को अपने रुहानी रूप या रुह की मंजिल सेकण्ड में स्मृति में आ जायेंगी. उनके रहम के संकल्प से भिखारीओं को सर्व खजानों की झलक दिखाई देगी. भटकती हुई आत्माओं को मुक्ति वा जिवनमुक्ति का किनारा वा मंजिल सामने दिखाई देगी. संस्कार -- बेहद विश्व की मनसा सेवा, बेहद के रहमदिल होकर, अमृतवेले और साम को हर रोज करें.

२. इष्ट देव आत्मा सदैव सर्व के दुख हर्ता सुख कर्ता का पार्ट अवश्य बजायेगी. दूसरे के दुख अपने दुख समान समझ सहन नहीं कर सकेगी. दूसरे का दुख को भूलाने की वा दुखी को सुखी करने की युक्ति वा साधन सदा उसके पास जादू की चाबी के मुआफिक होगी.

संस्कार -- दुख हर्ता - सुख कर्ता के संस्कार इमर्ज रूप में होंगे.

३. सदा संकल्प, बोल और कर्म से प्यूरिटी की पर्सानालिटी दिखाई देगी.
संस्कार - पवित्र वृति, पवित्र दृष्टि और पवित्र कृति.

४. सदा स्वभाव में, संस्कार में और चलन में सिम्पूल लेकिन श्रेष्ठ दिखाई देंगे.
संस्कार - स्वच्छ और सादगी भरा स्वभाव

५. जैसे आपके जड़ चित्र सदा श्रृंगारे हुए दिखाये हैं वैसे सर्व गुणों के श्रृंगार सदा सजे सजाये नजर आयेंगे. कोई एक गुण रुपी श्रृंगार भी कम नहीं होगा.
संस्कार - सर्वगुण (दिव्य-गुणों और देवी-गुणों) से सम्पन्न.

६. ऐसी इष्ट आत्मा के फीचर्स सदा स्वयं भी कमाल होंगे और दूसरे को भी कमल समान न्यारा और प्यारा बना देंगे.
संस्कार - न्यारा और प्यारा

७. ऐसी इष्ट आत्मा सदा स्थिति में अचल अड़ोल होगी. जैसे मूर्ति को स्थापित करते हैं, वैसे वह चैतन्य मूर्ति सदा एकरस स्थिति में स्थित होगी.
संस्कार - अचल और अड़ोल आत्मा, अंगद के समान

८. वह सदा सर्व के प्रति संकल्प और बोल में वरदानी होंगे. ग्लानि वा शिकायत करने वाले के ऊपर भी वरदानी.
संस्कार - सदा सर्व के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना के बोल ही निकलेंगे. ग्लानि करने वाले पर भी सदा को सुख का, शांति का वरदान देने वाला.

अभी हम सब अपने में चेक करें कि हमारे स्वभाव-संस्कार, ऊपर जो विशेषतायें बताई है उसके अनुसार कहा तक हुए है? अगर कोई छोटी-मोटी खामियां है तो उसे अभी हमें अपने पर वर्क (work) करके ही समाप्त करनी ही हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 06-10-14

अपने ज्ञान और योग से हम विकारी आत्माओं को सम्पूर्ण निर्विकारी देवी-देवता बनाने वाले, ऊंचे ते ऊंच बेहद के बाप ने कहा, "मीठे बच्चे - आर्डर करो कि हे भूतों (विकारों) तुम हमारे पास आ नहीं सकते, तुम उनको डराओ तो वह भाग जायेंगे."

कलियुग के अन्त में अभी विश्व की सर्व आत्माओं में विकारों रूपी पांच भूत, काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार, कम या ज्यादा रूप में जरूर हैं. बाबा हमें ईश्वरीय ज्ञान और योग सिखलाकर, हमारी आत्मा को इतनी शक्ति प्रदान करते हैं जिसे हम आत्माये इस पर विजय पा सके. बाबा के साथ हम आत्माये योग करते है तब बाबा हमारी आत्मा में दिव्य-गुणों को इमर्ज हैं और शक्ति भरते हैं. जब हमारी आत्मा गुणों और शक्तिओं से भरपूर हो जाती हैं तब हम आत्माये ईश्वरीय ज्ञान से इस पांच विकारों पर विजय पाने में सक्षम बनते हैं. अगर हम बाप के साथ योग में कच्चे होंगे तो हमारे में इन विकारों को जितने की शक्ति नहीं होगी इसलिए कभी-कभी ज्ञान होने पर भी हम इन विकारों के वश हो जाते हैं. फिर हार खा लेने के बाद मालूम पड़ता है कि हमने तो माया से हार खाली.

इसलिए बाबा हमें योग पर हमेशा ज्यादा जोर देते हैं. फिर ज्ञान का उपयोग कर आत्मा को स्वराज्य अधिकारी भी बनाना हैं कि झट से मालूम हो की माया का वार है तो उसे ज्ञान की तलवार में योग का जोहर भर समय पर काट सके.

अभी बाबा हमारे से इससे आगे का स्टेज ऐसा चाहते है कि, जहॉ हम आत्माये इन विकारों को पड़कार सके कि हे मूतो (विकारों) तुम हमारे पास आ नहीं सकते, हम आत्माये, सर्व-शक्तिमान के बच्चे मास्टर सर्व-शक्तिवान है. इतना अचल और अड़ोल निश्चय है तो यह भूत, आपे ही भाग जायेंगे.

इन विकारों पर विजय पाने के लिए हमारी आत्मा को नीचे बताई हुई दो बातों का अभ्यास करना ही हैं.

१. निश्चय बुद्धि विजयंती. - बाबा ने हमें ज्ञान में सिखलाया है कि हर ब्राह्मण आत्मा को चार मुख्य बातों में निश्चय बुद्धि बनना ही हैं. स्वयं में, बाबा में, ड्रामा में और परिवार में. स्वयं में निश्चय यानी यह पक्का हो कि हम आत्माये हैं. बाबा में निश्चय माना बाबा जिस रूप में पार्ट बजा रहे है उसे यथार्थ जानना और बाबा को मानना माना बाबा कि श्रीमत् को ऐक्युरेंट फोलो करना, फिर अपना बनाना माना तन-मन-धन-सम्बन्ध-संकल्प से बाबा के बेहद के यज्ञ की हड्डी सेवा करना. ड्रामा में निश्चय इस सृष्टि चक्र का ड्रामा ऐक्युरेंट है और मेरे लिए बहुत-बहुत कल्याणकारी हैं - यह निश्चय होना. परिवार में निश्चय माना में आत्मा अभी ईश्वरीय परिवार की हूँ. मेरे साथ यह सब आत्माये भी देवी-देवता बनने वाली है - यह निश्चय होगा तो हम सब को रिस्पेक्ट (respect) देंगे और हमें भी सब रिस्पेक्ट (respect) मिलेगा.

२. इच्छा मात्रम अविधा. - इस ईश्वरीय ज्ञान में आत्मा को आगे बढ़ने कि चाबी है - इच्छा-मात्रम अविधा. हम ईश्वरीय सेवा में कितना भी आगे बढ़े लेकिन अन्दर में कोई मान-शान की इच्छा का संकल्प भी न आये. अन्दर में कोई भी बात में "मेरा-पन" न हो - यह चेक करना हैं.

खुद को निमित समझकर बाबा के यज्ञ कि सेवा करना, ट्रस्टी समझकर कार्य-भार चलाना और साक्षी बनकर ड्रामा में हरेक का पार्ट देखना - यह अगर पक्का है तो हम विजयी आत्मा जरूर बनेंगे.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 07-10-14

हमें अपना सत्य स्वरूप आत्मा का और परमात्मा का सत्य ज्ञान देकर, देही-अभिमानी बनाने वाले, सदा आत्म-अभिमानी रहनेवाले परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने कहा, "मीठे बच्चे - देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करो, इस प्रैक्टिस से ही तुम पुण्य आत्मा बन सकेंगे."

हम सब यह तो जानते हैं बाप को याद करना मुश्किल नहीं हैं पर खुद को आत्मा समझना मुश्किल है क्योंकि हमें लास्ट ६३ जन्मो से देह-अभिमानी रहने की आदत पड़ी हुई हैं. इस लिए मेहनत स्वयं आत्मा समझने या देही-अभिमानी स्थिति बनाने में ही हैं. अगर हमारी स्थिति आत्मा-अभिमानी है तो बाप कि याद भी सहज ठहर सकेंगी.

देही-अभिमानी अवस्था बनाने के लिए एकाग्रता कि शक्ति को उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनानी हैं. इसके लिए एकान्त में फुरसत से बैठना हैं.

एकाग्रता कि शक्ति को उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए नीचे दिये हुए स्वमानो को उपयोग कर, स्वयं को एक ज्योति स्टार स्वरूप आत्मा के रुप में फील करें यानी बिजरुप अवस्था में रहने का अभ्यास बढ़ाये.

ध्यान में रहे कि इस स्वमानो को उपयोग करने से पहले, हमें अपने सब संकल्पों को मर्ज कर देना हैं.

में आत्मा हूँ. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूँ.

में आत्मा हूँ. शांत और पवित्र स्वरूप हूं. शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

में आत्मा हूँ. सत्य हूँ. चैतन्य हूँ. आनंद स्वरूप हूँ.

में आत्मा हूँ. अजड, अमर, अविनाशी हूँ.

में आत्मा हूँ. चैतन्य शक्ति हूँ. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूँ.

में आत्मा हूँ. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

आगे अभी आत्मिक स्थिति में रहकर शिवबाबा से दिव्य-गुणों और शक्तिओं का खजाना प्राप्त करने के लिए नीचे दिये हुए स्वमानो को उपयोग कर बाबा को याद करें. हर स्वमान में स्थित होकर बाबा से लंबे काल के लिए योग का अभ्यास करें.

में आत्मा हूँ. शिवबाबा का बच्चा हूँ. बाबा आप तो पवित्रता के सागर हों. आपसे पवित्रता की शक्ति लेकर में आत्मा सोलेकला सम्पूर्ण बन रही हूँ.

(फील करें बाबा से पवित्रता की किरणें निकल कर मुझ आत्मा में समा रही हैं, जिसे में आत्मा सम्पूर्ण पवित्र बन रही हूँ.)

में आत्मा हूँ. शिवबाबा का बच्चा हूँ. बाबा आप तो दिव्य-गुणों के भंडार हों. हम आपसे दिव्य-गुण लेकर सर्व-गुण समप्पन आत्मा बन रहे हैं.

(फील करें बाबा हमारा शांति का सागर हैं और बाबा से शांति की किरणें निकल कर मुझ आत्मा में समा रही हैं.

फील करें बाबा हमारा सुख का सागर हैं और बाबा से सुख की किरणें निकल कर मुझ आत्मा में समा रही हैं,

फील करें बाबा हमारा आनंद का सागर हैं और बाबा से आनंद की किरणें निकल कर मुझ आत्मा में समा रही हैं.

फील करें बाबा हमारा प्रेम का सागर हैं और बाबा से प्रेम की किरणें निकल कर मुझ आत्मा में समा रही हैं.

फील करें बाबा हमारा आत्मिक शक्तिओं का सागर हैं और उनसे भिन्न-भिन्न शक्तिओं की किरणें निकल कर मुझ आत्मा में समा रही हैं.)

यह प्रैक्टिस हमें आत्म-अभिमानी बनकर बाबा से योग करना सिखलायेगी, जिसे हमारी आत्मा सम्पूर्ण बन जायें. ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 08-10-14

जिसकी याद मात्र से हम आत्माये पतित से पावन (पवित्र) बन जाती है, वह पवित्रता के सागर बाप ने कहा, "मीठे बच्चे - याद में रहकर भोजन बनाओ और याद में रहकर खाओ तो तुम्हारा हृदय शुद्ध हो जायेगा. याद में बनाया हुआ भोजन खाने से शरीर को भी ताकत मिलती है और हृदय भी शुद्ध हो जाता हैं."

आज-कल भारत में खाना खाने से होने वाली बिमारीओं में सबसे ज्यादा हाई ब्लड-प्रेशर (blood pressure) और हाई बेड-कोलेस्ट्रोल (bad-cholesterol) बहुत लोगों को होता हैं और यह दोनों ही मनुष्य के हृदय को ही असर करते हैं. इसके अलावा और भी बहुत सारी बीमारियां मनुष्य के खुराक से ही होती हैं. इसका मुख्य आध्यात्मिक कारण अभी कलियुग के अन्त में विश्व की सभी आत्माये तमोप्रधान बन गई हैं. जिसकी असर प्रकृति पर भी पड़ती हैं, क्योंकि क़ुदरती नियम अनुसार प्रकृति, पुरुष (आत्मा) को फोलो (follow) करती हैं. प्रकृति के पांच तत्वों से ही मनुष्य का शरीर बनता है और मनुष्य का खुराक भी इस प्रकृति से ही बनता हैं. अभी सोचो तमोप्रधान आत्माये, तमोप्रधान शरीर में रहकर तमोप्रधान प्रकृति से मिला हुआ खुराक खायेंगी तो क्या होगा? बीमारियां तो बढ़ेगी ही.

मनुष्य की इस व्यथा का निदान बाबा ने आज की मुरली में दिया हैं. बाबा ने कहा, एक बाप की याद में रहकर ही भोजन बनाओ और बाप की याद में रहकर ही खाना खाओ तो तुम्हारा हृदय शुद्ध हो जायेगा और याद में बनाया भोजन खाने से शरीर में ताकत भी आयेंगी.

हमारा बाबा पतित-पावन भी है और पवित्रता का सागर भी हैं. जब हम आत्माये बाप को याद करती है तो स्वतः ही बाबा से पवित्रता की किरणें निकलकर हमारी आत्मा में समाती जाती हैं. जिसे ही भोजन बनाते वक्त या भोजन खाते वक्त बाबा की याद भोजन को शुद्ध करती हैं. इसके कारण बाप की याद में रहकर ही भोजन बनाना और भोजन खाना चाहिए.

गीता में लिखा हुआ भी है जैसा अन्न वैसा मन और जैसा मन वैसा तन. अगर आज-कल का तमोप्रधान अन्न हम बाप की याद से शुद्ध बनाये बिना खायेंगे तो उसकी असर हमारे मन

और तन पर भी पड़ सकती हैं जिसके कारण ही अनेक प्रकार कि तन कि और मन कि बीमारियां हो सकती हैं.

बाबा ने हम ब्राह्मणों को कहा है, दिन-भर में जो भी खाओ-पीओ लेकिन पहले बाबा को याद कर उसे दृष्टि देकर शुद्ध बनाओ, फिर बाबा को अर्पण करो और बाद में बाबा की याद में रहकर ही अपने तन को दो. इस विधि को याद रखने से हमारा मन शक्तिशाली और तन दोनों तंदुरुस्त रहेगा, कोई भी प्रकार की बीमारियां नहीं होगी.

बाबा ने आज की मुरली में बाप की याद में रहकर बनाये हुए भोजन की खूब महिमा की है, उसमें से कुछ पॉइन्टस हम याद रखे तो भी हम बाबा को भोजन के समय याद जरूर करेंगे.

- बाबा समझाते हैं खाना बनाओ, मिठाई बनाओ शिवबाबा को याद करते रहो. शिवबाबा को याद कर मिठाई बनायेंगे तो खाने वाले का भी कल्याण होगा.

- बाबा कहते है बाबा की याद में बनाये हुए भोजन को खाने से कही साक्षात्कार भी हो सकता है. ब्रह्मा का भी साक्षात्कार हो सकता है. शुद्ध अन्न पड़ता है तो ब्रह्मा का, कृष्ण का, शिव का साक्षात्कार कर सकते हैं.

- जैसे वह लोग समझते है हम गुरुनानक को भोग लगा रहे हैं, तुम भी समझते हो हम शिवबाबा को भोग लगाने के लिए बनाते हैं.

- शिवबाबा को याद कर बनायेंगे तो बहुतो का कल्याण हो सकता है. उस भोजन में ताकत हो जाती है इसलिए बाबा भोजन बनाने वालों को भी कहते हैं शिवबाबा को याद कर बनाते हो? याद में रहकर बनायेंगे तो खाने वाले को भी ताकत मिलेगी, हृदय भी शुद्ध हो जायेगा.

- ब्रह्मा भोजन का तो शास्त्रों में गायन भी है ना. ब्राह्मणों का बनाया भोजन तो देवताये भी बहुत पसन्द करते है. ब्राह्मणों का बनाया हुआ भोजन खाने से बुद्धि शुद्ध हो जाती है, ताकत रहती हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 09-10-14

इस ईश्वरीय ज्ञान के आधार से बाप को पहचान कर बाप को जानने वाले, फिर ज्ञान को स्वयं में धारण कर ईश्वरीय गुणों और शक्तिओं का अनुभव कर बाप को मानने वाले, और बाबा के यज्ञ की सेवा में अपना तन-मन-धन लगाकर बाप को अपना बनाने वाले हम भाग्यशाली बच्चों को ज्ञान-सागर बाप ने कहा, "मीठे बच्चों - सभी मनुष्य आत्माओं के शरीर का नाम हैं. बाकी एक ही परम आत्मा है, जिसको अपना शरीर नहीं है. उस परम आत्मा का नाम है शिव. तुम्हें सब को शिवबाबा का परिचय देना हैं."

हम ब्रह्माकुमार-कुमारीओं का मुख्य कार्य ही है बाप का परिचय सब को देना. बाबा ने आज की मुरली में अलग-अलग पॉइन्टस दी है जो हमें औरो को बाप का सहज परिचय देने में मदद कर सकते है तो वही पॉइन्टस को रिपिट करेंगे.

- हम सब मनुष्य आत्माओं के शरीर का नाम होता है. बाकी एक ही परम आत्मा है जिसको अपना शरीर नहीं है. उस परम आत्मा का नाम है शिव.

- शिव ही रचयिता है तो वही इस सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा राज (razz) हमें समझा रहे है.

- परमात्मा शिव ही अपने आने का समय भी हमें बताते है जब कि नई सृष्टि की स्थापना और पुरानी का विनाश होना होता हैं.

- परमपिता-परमात्मा शिव द्वारा ही नई दुनिया में एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना भी होती हैं.

- परमपिता-परमात्मा शिव ही एक बार पुरुषोत्तम संगमयुग पर आते है, नई सतयुगी दुनिया की स्थापना और इस पुरानी दुनिया का विनाश करने.

- शिव-भगवान उवाच, कोई भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जाता है. बाप कहते है, बाप के बिगर तो बाप का सही परिचय कोई दे न सके क्योंकि बाप को तो कोई जानते ही नहीं.

- शिव को परमात्मा और हम आत्माओं को सालिग्राम कहा जाता है.

- जैसे हमारे शरीर में हम आत्माये है लेकिन उसे कोई देख नहीं सकता है. वैसे शिव बाबा को भी कोई देख नहीं सकता है, उन्हें तो बुद्धि से जाना जाता हैं.

- शिव बाप भी हमारी तरह आत्मा बिंदी है लेकिन वह ज्ञान का सागर है. वही हमें सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते है. अन्य कोई भी देहधारी आत्मा को ज्ञान सागर नहीं कहा जाता.

- कितने भी वेद-शास्त्रों पढ़े लेकिन उसमें आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र का ज्ञान नहीं है. वह ज्ञान तो स्वयं परमात्मा शिव आकर ही हम मनुष्यों को देते हैं.

- हम सब आत्माये है ब्रदर्स (brothers). एक मनुष्य आत्मा दूसरी मनुष्य आत्मा को कभी भी सद्गति नहीं दे सकता हैं. सारे विश्व की सर्व आत्माओं की सद्गति करने वाला तो है एक बाप, जिसे ही परमपिता-परमात्मा शिव कहा जाता हैं.

- पतित-पावन यानी पतित आत्माओं को पावन बनाने वाला तो एक ही निराकार बाप है. कोई भी देहधारी पतित-पावन हो न सके. शिव को ही पतित-पावन परमात्मा कहा जाता है.

- परमात्मा शिव सर्वव्यापी नहीं हैं. माया सर्वव्यापी है इसलिए ही सारे विश्व के कोने-कोने में दुख और दुराचार फैला हुआ है क्योंकि अभी सब आत्माओं में पांच विकारों रुपी भूत हैं.

- सर्व आत्माओं में वह है सबसे ऊंचे ते ऊंच आत्मा. उन्हें ही परमपिता-परमात्मा शिव कहते हैं.

ऐसे विचार-सागर-मंथन कर, पॉइन्टस निकालकर, हमारी बुद्धि में रखने से किसी को भी समझाने में हमें मदद मिलेगी.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 10-10-14

हर रोज नई-नई युक्तियां देकर हम आत्माओं को याद की यात्रा सिखलाकर, हम आत्माओं को पाप-आत्मा से पुण्य आत्मा बनाने वाले, परमपिता-परमात्मा शिव ने कहा, मीठे बच्चे - तुम जितना-जितना बाप को प्यार से याद करेंगे उतना आशीर्वाद मिलेगी, पाप कटते जायेंगे.

भक्ति-मार्ग में कई जन्मो से हम कितने भटकते थे, जहॉ कुछ थोड़ा सा सुना कि इस गुरु कि या बाबा का आशीर्वाद मिल जाये तो हमारा जीवन कृतार्थ हो जाये. हमें जीवन में सुख-शांति मिल जायें. उससे हमें सदा के लिए सुख-शांति तो मिली नहीं लेकिन हमारे में दर-दर भटक कर गुरुओं के सामने जाकर आशीर्वाद की भीख मांगने के संस्कार जरूर बन गये.

अब परमात्मा स्वयं आकर हमें ज्ञान देकर समझा रहे है कि सच्चा आशीर्वाद किसको कहा जाता है? सच्चा आशीर्वाद कहा जाता है जहॉ आत्मा को सदा के लिए सुख-शान्ति मिले, आत्मा शक्ति से भरपूर हो कर अपनी कर्मेन्दियों पर राज्य चलाये. इसके लिए आत्मा को परमात्मा से योग कर अपने में बल भरना होता हैं. बाप कहते है, आशीर्वाद कोई मांगने की चीज नहीं है. यह तो आत्मा को स्वयं पुरुषार्थ कर, एक बाप की याद में रहकर अपने पर ही रहम करने की बात हैं. जितनी आत्मा, परमात्मा-बाप को जास्ती याद करेगी उतना जास्ती बाप से आशीर्वाद पायेगी या कहे ज्यादा बलवान बनेगी. फिर अभी के पुरुषार्थ के आधार से ही उस आत्मा सतयुग में भी ऊंच पद को प्राप्त करती हैं.

बाबा ने आज सारी मुरली में याद की यात्रा के लिए जो भी पॉइन्टस कहे है उसे हम अपनी आत्मिक स्थिति में रहकर एक बार पढ़ेंगे तो हमें अपनी स्थिति देही-अभिमानी बनाने की प्रैक्टिस होगी और देही-अभिमानी स्थिति में बाबा को याद करने से हमारी आत्मा भी पावन बनती जायेगी.

- बाप बैठ रुहानी बच्चों को समझाते हैं जब ॐ शान्ति कहा जाता है तो गोया अपनी आत्मा को स्वधर्म का परिचय दिया जाता है (इसका मतलब हमें अपने सब संकल्पों को मर्ज कर शान्ति में ऐटेन्शन से बैठना होता है). तो आत्मा को जरूर बाप भी ऑटोमेटिकली याद आता है क्योंकि याद तो हरेक मनुष्य भगवान को ही करते हैं.

- बाप समझाते है, सतयुग में आत्मा बलवान है, तो पवित्र-निर्विकारी रहती हैं. फिर आत्मा में जन्म-बाय-जन्म बल कम होने से आत्मा पवित्र-निर्विकारी से अपवित्र-विकारी बनती हैं. अभी आत्मा को पुरुषार्थ कर बाप की याद से फिर से बलवान बनाना हैं. बाप है सर्वशक्तिमान. उनकी याद से ही आत्मा बलवान बनती हैं.

- बाप कहते हैं मुझे और वर्से को याद करो. हद के सब सम्बन्ध को छोड़ अब बेहद के सम्बन्ध को ही याद करना है.

- बाप को याद करने से ही आत्मा में देवी-गुण धारण करने की शक्ति आती है, जिसे ही आत्मा के देवी संस्कार बनते है.

- बाप (परमात्मा) तो है ही विदेही, विचित्र. तो बच्चे (आत्माये) भी विचित्र हैं. यह समझ ने की बात है. हम आत्मा विचित्र हैं फिर यहॉ चित्र (शरीर) में आते हैं. अभी बाप फिर कहते हैं विचित्र बनो, अपने स्वधर्म में टीकों और विचित्र बाप को याद करो.

- बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान, प्योर बनेंगे.

- शिवबाबा तो न मनुष्य है, न देवता है. उनको सुप्रीम आत्मा कहा जाता हैं. वह तो पतित वा पावन नहीं होता, वह तो है ही एवर-प्योर. वह समझाते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे पाप कट जायेंगे. तुम सतोप्रधान बन जायेंगे.

- साकारी देवताओं के लिए कहा जाता है, ब्रह्मा देवताए नम: विष्णु देवताए नम:. फिर परमात्मा के लिए कहते हैं शिव परमात्माए नम:. तो परमात्मा सबसे बड़ा ठहरा ना. उनको ही पतित-पावन कहा जाता हैं. अब हम आत्माओं को पावन बनाना उस परमात्मा का ही काम है.

- बाप तुम्हें श्रीमत् देते है, मीठे बच्चे - अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो. ऐसे हर रोज बाबा के महावाक्यों को हम आत्मा समझ बाप की याद में रहकर पढ़ेंगे तो हमें आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस भी होगी और हमारी आत्मा भी पावन बन जायेंगी.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 11-10-14

अपने ज्ञान से हम आत्माओं को परमात्मा और सृष्टि चक्र की याद सिखलाने-वाले, बेहद के ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - शांतिधाम और सुखधाम को याद करो, इस दुखधाम का बुद्धि से सन्यास करो(दुखधाम को भूलते जाओ).

बाबा हमें हर साकार मुरली में कहते है बाप और वर्से को याद करो. यह तो सब जानते है कि खुद को आत्मा समझकर बाप को याद करना है लेकिन आत्मा को स्वदर्शन-चक्र कैसे फिराना है वह आज बाबा ने मुरली में सिखलाया हैं.

- हम आत्माये तीन धामों का चक्र लगाती हैं, शांतिधाम, सुखधाम और यह हैं दुखधाम. जब मैं आत्मा शांतिधाम में हूँ तो मैं मुक्ति में हूँ. फिर मैं आत्मा सुखधाम में हूँ तो में जीवनमुक्ति में हूँ. बाद में जब मैं आत्मा दुखधाम में आती हूँ तो मैं जीवनबन्ध में हूँ. अभी मैं आत्मा जीवनबन्ध से जीवनमुक्ति में जा रही हूँ.
- हम आत्माये अपने घर शांतिधाम में है तो सम्पूर्ण पवित्र हैं. वहॉ से हम आत्माये पहले-पहले आते है सम्पूर्ण पवित्र दुनिया सतयुग में पार्ट बजाने. फिर पार्ट बजाते-बजाते हम आत्माये अपवित्र बन जाती हैं तो सारी दुनिया भी अपवित्र बनती हैं. अब हम आत्माओं का बाबा आया हुआ हैं, जिसे याद करने से हम आत्माये वापस पवित्र बन जायेंगी. फिर पवित्र आत्मा, अपने बाबा के साथ घर वापस चली जायेगी. फिर सतयुग में फिर से पार्ट बजाने आयेगी.
- जब मैं आत्मा सतयुग में हूँ तो सच्चे सोने के समान सूर्यवंशी हूँ. फिर त्रेतायुग से मुझ आत्मा में चांदी की खाद पड़ती है तो चन्द्रवंशी बन जाती हूँ. फिर द्वापर में मुझ आत्मा में तांबे की और कलियुग में मुझ आत्मा में लोहे की खाद पड़ती हैं. अब संगमयुग में बाबा के साथ योग से मुझ आत्मा में चांदी, तांबा, और लोहे की जो खाद पड़ी है वह निकाल जाती हैं. योगबल से मैं आत्मा वापस सच्चा सोना बन जाती हूँ.
- पहले तो हम आत्माये अपने घर, शांतिधाम में है फिर पहले-पहले आते है सतयुग में, उस को कहा जाता है गोल्डन एजड. फिर हम आत्माये गोल्डन एजड से सिल्वर एजड में और बाद में आते है कोपर एजड में. फिर पिछाड़ी में हम आत्माये आइरन एजड में आते है क्योंकि

आत्मा में खाद पड़ती हैं. अब हम आत्माओं को वापस सतोप्रधान बनकर गोल्डन एजड में जाना हैं. वहॉ प्रकृति भी वहॉ सतोप्रधान हैं तो हमें शरीर भी सतोप्रधान मिलेगा.

- अभी पहले-पहले मुझ आत्मा को शांतिधाम जाना है इसलिए बाप को याद करना है तब ही मैं आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती हूँ. इसमें टाइम भी इतना ही लगता है जितना टाइम बाप यहॉ रहते हैं. वहॉ से मुझ आत्मा को शरीर मिलता है सतयुग में, तो कहा जाता है - गोल्डन एजड जीवात्मा. गोल्डन एजड जीवात्मा से फिर मैं बनती हूँ सिल्वर एजड जीवात्मा. सिल्वर एजड जीवात्मा से बनती हूँ कोपर एजड जीवात्मा और अन्त में होती हूँ तमोप्रधान आइरन एजड जीवात्मा. अभी वापस बाप की याद से मुझ आत्मा को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना हैं और अपने घर शांतिधाम जाना हैं. इसके लिए मुझे इस पुरानी दुनिया दुखधाम का सन्यास करना हैं.

- मैं आत्मा, इस सृष्टि चक्र के ड्रामा में आधाकल्प, सतयुग और त्रेतायुग, देही-अभिमानी रहकर अपना पार्ट बजाती हूँ. फिर आधाकल्प, द्वापर और कलियुग, देह-अभिमान में रहकर पार्ट बजाती हूँ. अब संगमयुग पर वापस मुझे देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करनी है और फिर बाबा के साथ घर जाना हैं. वापस सतयुग के आदि में देही-अभिमानी होकर पार्ट बजाने आना हैं.

- मुझ आत्मा को सारे सृष्टि चक्र में पार्ट बजाते भिन्न-भिन्न तख्त मिलते हैं. सतयुग के आदि में मुझे बड़ा फस्टक्लास तख्त मिलता है उसे कहेंगे गोल्डन एजड तख्त. फिर मुझ आत्मा को सिल्वर, कोपर और आइरन एजड तख्त मिलते हैं. अभी वापस मुझे गोल्डन एजड तख्त चाहिए इसलिए बाप को याद करना है जिसे मुझ आत्मा की खाद निकाल जाये.

- अभी में आत्मा ईश्वरीय सम्प्रदाय में अपना पार्ट बजा रही हूँ. फिर मैं आत्मा, दैवी-सम्प्रदाय में अपना पार्ट बजाने आती हूँ. फिर क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सम्प्रदाय में मेरा पार्ट चलता हैं. फिर बाबा आते है और मेरा वापस ईश्वरीय सम्प्रदाय में पार्ट शुरू होता हैं. ऐसे में आत्मा यह सृष्टि चक्र में अपना प्रि-रेकोडेड (pre-recorded) , भिन्न-भिन्न पार्ट बजाती रहती हूँ.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 12-10-14

समय से पहले अपने को ब्रह्मा बाप समान, सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने का पुरुषार्थ है लगावमुक्त बेहद की वैराग्य वृति और इसके लिए सहज साधन है - सदा स्नेह के सागर में समा जाओ.

बापदादा कहते है सब बच्चों का बापदादा से स्नेह तो बहुत है तो सिर्फ स्नेह में डूबे रहो, स्नेह के सागर से बहार नहीं निकलो. लेकिन बापदादा के स्नेह में सदा के लिए डूबे भी तब रह सकेंगे जब पुराना सब क़ुरबान किया हो और इसके लिए अभी समय प्रमाण सबको अपने में बेहद की वैराग्य वृति को इमर्ज करना ही होगा. बापदादा समझाते हैं कि इसमें बच्चों का समय शिक्षक नहीं बने, जब बाप शिक्षक है तो समय पर बनना - यह समय को शिक्षक बनाना है. समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तजार नहीं करो. आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो. समय आपकी रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ.

ब्रह्मा बाप को इसमें फोलो करो. ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा. आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा. तन के लिए सदा नेचुरल बोल यही रहा - बाबा का रथ है. बाबा के रथ को खिलाता हूँ. जैसे तन से बेहद का वैराग्य वैसे मन तो मनमनाभव ही था. धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प मात्र भी नहीं आया कि मेरा धन लग रहा है. सारे धन को कन्याओं-माताओं को विल किया और कन्याओं-माताओं को जिम्मेवारी दे दी, धन में मेरापन नहीं रखा. समय, श्वास अपने प्रति नहीं, उसमें भी बेहद के वैरागी रहे. अपने प्रति कोई ऐक्सट्रा साधन उपयोग नहीं किया, सदा साधारण लाइफ में रहे. कोई स्पेशल चीज अपने कार्य में नहीं लगाई. वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे. बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं के लिए उपयोग नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए उपराम रहे. इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृति प्रत्यक्ष जीवन में रही. अन्त में शरीर छोड़ते समय पर, बच्चे का हाथ पकड़ा हुआ है लेकिन लगाव रहा? बेहद की वैराग्य वृति.

ब्रह्मा बाप ने अन्त में भी सेकण्ड में उपराम वृति का, बेहद का वैराग्य का सबूत बनकर दिखाया. बापदादा भी सभी बच्चों से कहते है - अभी समय प्रमाण अपने में बेहद के वैराग्य वृति को इमर्ज करो. बिना बेहद के वैराग्य वृति के सारे विश्व को सकाश देने की सेवा हो नहीं सकती. ब्रह्मा बाप समान पास विद ऑनर का सर्टिफिकेट लेना हो तो अपने में बेहद की वैराग्य वृति को इमर्ज करो.

बापदादा देखते है बच्चों में अभी सूक्ष्म सोने की जंजीर के लगाव, बहुत महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं. कई बच्चे तो लगाव को समझते भी नहीं हैं कि यह लगाव है. समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही हैं. मुक्त होना ही नहीं जानते. ऐसे अनेक प्रकार के लगाव बच्चों को बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं. चाहना है बने, संकल्प भी करते हैं - बनना ही है. लेकिन चाहना और करना दोनों का बैलेन्स नहीं है. चाहना ज्यादा है, करना कम है. बापदादा चाहते है कि करना ही है - यह वैराग्य वृति सभी बच्चों में इमर्ज होनी चाहिए. समय तो करायेगा लेकिन फिर पास विद ऑनर नहीं बन सकते.

बापदादा जब बच्चों के गीत सुनते हैं - उड़ जायें, उड़ जायें.... तो सोचते हैं उड़ा तो लें लेकिन लगाव उड़ने देंगे या न इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे? अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो. मन से वैराग्य हो. बापदादा चाहते है सभी अपने सम्पूर्णता के दर्पण से अपने सूक्ष्म लगाव को चेक करें और उसे समाप्त करें. बापदादा से प्यार है ना तो प्यार में यह गिफ्ट दो.

ॐ शांति.

आज की मुरली सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 13-10-14

हम बच्चों को ईश्वरीय श्रीमत् देकर, शूद्र से दैवी आत्मा बनाने वाले पतित-पावन बाप ने कहा, एक ईश्वरीय मत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ देवता बनेंगे.

क्या हैं ये ईश्वरीय मत?

1. बाबा हमें सबसे पहली मत देते हे, बच्चे खुद को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो, तो तुम्हारे 63 जन्मो के विकर्म, जो विकारों के रूप में आत्मा में हे वह भस्म हो जायेंगे ओर आत्मा संपूर्ण पावन बन जायेंगी.

(प्रैक्टिस -- देही-अभिमानी रहकर जीवन जीने की और आत्म-अभिमानी स्थिति में रहकर बाबा को याद में रहने की प्रैक्टिस करों.)

2. संपूर्ण पवित्र ब्राह्मण जीवन. इसलिए बाबा हमें युक्ति बताते हे एक-दूसरे के प्रति आत्मा भाई-भाई की वृति रख, दृष्टि से एक-दूसरे को भ्रकुटी में आत्मा भाई को ही देखो.

(प्रैक्टिस -- ब्राह्मण जीवन जीते अन्य आत्माओं के सम्बन्ध-समपर्क में आते अंदर से वृति आत्मा भाई-भाई की रखो.)

3. मन को मजबूत बनाने के लिए, स्वदर्शन चक्रधारी बनो. बाबा हमें ये ड्रिल इसलिए सिखाते हे, जिसे हमें स्वचिंतन करने की प्रैक्टिस हो तो हमारी स्थिति अंतर्मुखी बन जायेगी. अंतर्मुखी स्थिति बहुत मजबूत स्थिति हे, जिसे हम माया के कोई भी वार से सहज ही बच सकते हैं.

(प्रैक्टिस - अलग-अलग रीति से स्वदर्शन चक्र फिराने की प्रैक्टिस करो.)

4. साधन, सम्पति ओर सम्बन्ध से संपूर्ण वैराग्यता. इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर मेरा मन अगर माया के वश हो कर साधन,सम्पति ओर सम्बन्ध में भटक गया तो ईश्वरीय प्राप्तिओ से हम वंचित रह जायेंगे. इसलिए बाबा हमें साधन, सम्पति ओर सम्बन्ध से संपूर्ण वैराग्य दिलाते हे ओर सच्चाई, सादगी ओर स्वच्छता को हमारे जीवन में धारण करवाते हैं.

(प्रैक्टिस – जरूरत से ज्यादा साधन, सम्पति और सम्बन्ध में अपना अमूल्य समय बरबाद न करो. अपने ब्राह्मण जीवन में सच्चाई, सादगी और स्वच्छता को धारण को धारण करो.)

5. कर्मयोगी जीवन. ब्राह्मण जीवन में माया से बचने के लिए, बाबा हमें याद की यात्रा में रहने का सिखलाते हे. हर कर्म करते बुद्धि का योग एक बाप से रहे इसे ही कर्मयोगी जीवन कहा जाता हैं.

(प्रैक्टिस - कर्म करते बाबा की याद रहे इसलिए ट्रैफिक कंट्रोल को यूज करो.)

6. दैवी-गुण धारण करना हैं. बाबा ने कहा हे, किसी भी आत्मा को मन-वचन-कर्म से दुख नहीं देना हैं.

(प्रैक्टिस - सदा खुश रहने का चार्ट रखो.)

7. ईश्वरीय नियमबद्ध जीवन. सुबह अमृतवेला, मुरली क्लास, खाने-पीने की धारणा, कम बोलो - मीठा बोलो - धीरे बोलो. साम का योग ओर चार्ट.

(प्रैक्टिस - नियमित जीवन बनाओ.)

8. खुद को निमित्त समझ कर, विश्व की सर्व आत्माओं की सेवा करना ओर ट्रस्टी हो कर संसार का कारोबार चलाना.

(प्रैक्टिस - उपराम, न्यारा-प्यारा होकर रहो.)

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 14-10-14

हमारे भारत के भाग्य-विधाता, परमात्मा शिव ने जिस भूमि पर आकर हम बच्चों को आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र का सारा ज्ञान दिया, उस पवित्र भूमि - आबू के बारे में बाबा ने कहा, तुम्हें आबू की महिमा सबको बतानी ही हैं.

सारे भारत में कितने सारे तीर्थ-स्थान हैं और कई तो बहुत ऊंचाई पर भी हैं, वहॉ आने-जाने में लोगों को कितनी मेहनत पड़ती हैं. लेकिन फिर भी वहॉ जाने से भगवान तो मिलते नहीं, मुफ्त में टाइम और मनी दोनों वेस्ट होते हैं.

यहॉ आबू में हम भाग्यशाली बच्चों को स्वयं परमपिता-परमात्मा आकर ईश्वरीय ज्ञान और योग सिखला रहे हैं. जिसे हम आत्माये मनुष्य से देवता बन जाते हैं. परमात्मा को तो सब ऊंच ते ऊंच मानते भी हैं. अब जहॉ स्वयं परमात्मा आकर हम बच्चों को मिलते है उस स्थान की महिमा भी सबसे ऊंच ही होनी चाहिए.

आबू में बना देलवाड़ा मंदिर भी हमारे संगमयुग और सतयुग की यादगार हैं. मंदिर में रखी आदि-देव और अन्य मूर्तियाँ अभी के हमारे संगमयुग की यादगार है जहॉ हम ब्रह्मा बाप (जिसको आदि-देव भी कहा जाता हैं) और हम बच्चे परमात्मा की याद में तपस्या में बैठे हैं. यह भी हम जानते है कि हमारी अभी की तपस्या से ही इस धरती पर सतयुग स्थापन होना हैं और हमें ही सतयुग में पार्ट बजाने आना हैं. तो उसके यादगार के रुप में सतयुग के कुछ नजारे भी देलवाड़ा मंदिर में बताये हैं.

आबू ही श्रेष्ठ भूमि है कि जहॉ पर परमात्मा स्वयं आकर अपना पार्ट बजा रहे है और हमारे भारत को स्वर्ग बना रहे हैं. तो इस हिसाब से आबू ही सबसे ऊंच तीर्थ स्थान भी हैं.

आज की बाबा की मुरली से आबू पर कहे गये महावाक्यों को रिपिट कर उस पर और विचार-सागर-मंथन करेंगे तो किसी को भी हम आबू की महिमा समझा सकेंगे.

- बाप ने आबू कि महिमा पर समझाया हैं, इस पर ख्याल करना चाहिए. तुम्हारी बुद्धि में आना चाहिए तुम यहॉ बैठे हो. तुम्हारा यादगार देलवाडा मंदिर बना हैं कितने वर्ष बाद बना

हैं. कहते है १२५० वर्ष हुए (कलियुग के आदि में). अब फिर से कितने वर्ष बाद फिर बनेगा, ३७५० वर्ष बाद. तो बनाने वालों ने भी अभी संगमयुग की यादगार और वैकुण्ठ (सतयुग) का यादगार बनाया हैं.

- आबू की महिमा को अच्छी रिती सिद्ध करना ही हैं. तुम भी यहॉ बैठे हो. यहॉ ही बाप सारे विश्व को नर्क से स्वर्ग बना रहे हैं तो यही सबसे ऊंच ते ऊंच तीर्थ ठहरा.

- अभी बाबा आबू की कितनी महिमा करते हैं. सर्व तीर्थों में यह महान तीर्थ हैं.

- अब दुनिया को कैसे पता पड़े की यह सबसे ऊंच तीर्थ हैं. देलवाड़ा जैसा मंदिर शायद आस-पास और भी हो वह भी जाकर देखना चाहिए. कैसे बना हुआ है.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:15-10-14

अपने बेहद के ज्ञान के आधार से हम बच्चों को निश्चय बुद्धि बनाने वाले ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मैं तुम बच्चों को ८४ के चक्र का नॉलेज देता हूँ. मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ परन्तु प्रैक्टिकल में ८४ जन्मो के चक्र में आता नहीं हूँ. तो इससे समझ जाना चाहिए शिव बाप में सारा ज्ञान हैं.

जब हम आत्माये यह ईश्वरीय ज्ञान पहली बार सुनती है तब हमें अंदर से अहसास होता है कि यह ज्ञान कोई भी देहधारी मनुष्य नहीं दे सकता क्योंकि यह ज्ञान में ऐसी कई बातें है जो बिलकुल ही नई है और कोई भी वेद-शास्त्रों-उपनिषद या धर्मग्रंथों में यह बात है नहीं. बाबा ने हमें जो आत्मा, परमात्मा और सारी बेहद की सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया है, यह ज्ञान सिवाय स्वयं परमात्मा के और कोई नहीं दे सकता. यह ज्ञान तो उन्हें ही हो सकता है जो इस सारी सृष्टि का रचयिता हैं (इसलिए कहा जाता है कि रचयिता को ही रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हो सकता हैं). तो हमने बाप को पहचाना है यह ईश्वरीय ज्ञान के आधार से या कहे हमें बाप में निश्चय हुआ है इस परमातम ज्ञान के आधार से.

आज भी बाबा ने मुरली में इस परमातम ज्ञान की कई ऐसी गुह्य बातें कही है जिसे आप स्वयं विचार-सागर-मंथन कर सोचे की यह ज्ञान सिवाय ज्ञान-सागर बाप के अलावा कोई दे सकता हैं. यह सोचेंगे तो इससे भी हमारा परमात्मा प्रति निश्चय और भी पक्का होता जायेगा. जितना हमारा निश्चय ज्ञान में पक्का होगा उतना ही हमारा पुरुषार्थ भी तीव्र होगा.

ज्ञान-सागर परमात्मा -- बाबा ने कहा, मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ परन्तु प्रैक्टिकल में ८४ जन्मो के चक्र में नहीं आता हूँ. बाबा ही तुम्हें ८४ जन्मो का ज्ञान देकर तुम्हें फिर से स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं. बाबा को ८४ जन्मो का अनुभव प्राप्त नहीं होता, लेकिन तुम्हें ८४ जन्मो का अनुभव प्राप्त होता हैं. बाप को अनुभव नहीं है फिर भी बाप तुम्हें यह बताते है की यह सारा चक्र ८४ जन्मो का हैं. इसलिए बाप को ज्ञान-सागर कहा जाता हैं. बाप के सिवाय अन्य कोई भी आत्मा में यह सृष्टि चक्र ज्ञान होता नहीं हैं.

बिजरूप शिवबाबा -- बाबा ने कहा, मैं तो यह ८४ जन्मो के चक्र में आता नहीं हूँ. फिर मेरे में यह ज्ञान कहा से आया? लौकिक में जब कोई टीचर, स्टुडेन्ट्स को पढ़ाते है तो टीचर भी कहा से पहले पढ़ा हुआ तो है ना. तो यह शिवबाबा कैसे पढ़ा? उनको यह ज्ञान किस ने दिया? बाबा कहते है वह मनुष्य आत्माओं का बिजरूप है तो उन्हें मनुष्य आत्माओं के, कल्पवृक्ष

का ज्ञान हैं. जैसे बड़ का झाड़ होता है तो उसका बिज अंदर में रहता है लेकिन उसमें भी सारे वृक्ष की टाल-टालीयों का ज्ञान हैं. लेकिन वह तो चैतन्य नहीं होता. यह फिर है चैतन्य बिज. उन्हें फिर सारी मनुष्य आत्माओं के कल्पवृक्ष का सारा ज्ञान हैं. वही बता सकता है की कभी यह वृक्ष नया होता है फिर जड़-जड़ी भूत पुराना होकर विनाश होता है और फिर से नया बनता हैं. बिज को ही वृक्ष के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान होता हैं.

ऊंच ते ऊंच भगवान - बाबा कहते हैं ८४ जन्म मैं नहीं लेता हूँ, तुम लेते हो. तो जरूर प्रश्न उठेगा ना - बाबा आपको कैसे मालूम पड़ा. बाबा कहते हैं - बच्चे, अनादि ड्रामा अनुसार मेरे में पहले से यह नॉलेज है, जो तुमको पढ़ाता हूँ इसलिए ही मुझे ऊंच ते ऊंच भगवान कहा जाता है और यह ईश्वरीय पढ़ाई भी ऊंचे ते ऊंच गाई जाती हैं.

सृष्टि चक्र में मुख्य आत्माओं का पार्ट का राज (razz) -

- एक ही आत्मा ब्रह्मा और विष्णु अर्थात नारायण का पार्ट बजाती हैं. आत्मा एक है, शरीर दो हैं.
- एक ही आत्मा सरस्वती और लक्ष्मी दोनों पार्ट बजाती हैं. अभी जो सरस्वती है फिर वही आत्मा सतयुग आदि में लक्ष्मी बनती हैं.
- एक आत्मा ज्यादा से ज्यादा ८४ जन्मो का पार्ट अलग-अलग शरीर में बजाती हैं.
- अभी तुम आत्माये ब्राह्मण बने हो फिर सतयुग में देवता बनेंगे. त्रेतायुग में क्षत्रिय, द्वापर में वैश्य और कलियुग में शूद्र बनते हों.
- सब आत्माये असूल में परमधाम में रहने वाली हैं फिर यहॉ सृष्टि चक्र के ड्रामा में नम्बरवार, ऊपर से पार्ट बजाने आती हैं.
- सतयुग-त्रेता ज्ञान-मार्ग है यानी आत्मा अपने-आप को जानकर पार्ट बजाती हैं. द्वापर-कलियुग भक्तिमार्ग है यानी आत्मा अपने-आप को भूल जाती है और शरीर के भान में रहकर ही पार्ट बजाती हैं.
- सतयुग-त्रेता में कोई शास्त्र आदि होते नहीं. यह सब भक्तिमार्ग में, द्वापर से बनाते हैं.

यह बातें परमात्मा बाप के सिवाय और कोई बता सकता है? यही ज्ञान हमारा निश्चय बाप में अटल बनाता है.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:16-10-14

हम भाग्यशाली बच्चों को आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के ड्रामा का ऐक्युरेट ज्ञान देकर, हमें खुशी के खज़ाने से भरपूर करने वाले, खुशियों के सागर, बाप ने कहा, मीठे बच्चे - उठते-बैठते बुद्धि में ज्ञान उछलता रहे तो अपार खुशी में रहेंगे.

अगर हमने यह ईश्वरीय ज्ञान को ऐक्यूरेट समझा और स्वयं में धारण किया है तो कुछ भी हो जाये पर हमारी खुशी नहीं जायेंगी - यह गारंटी हैं. यह ज्ञान हमें सबसे पहले सिखाता है - मैं आत्मा हूँ. अगर यह हमने धारण किया है तो हमें यह भी मालूम रहता है की आत्मा तो सदा दिव्य गुणों - सुख, शांति, आनंद और प्रेम से भरपूर रहती है तो उसको पाने के लिए किसी भी अन्य आत्मा पर या प्रकृति पर निर्भर नहीं रहेंगे.

दूसरा यह ज्ञान हमें स्वयं परमात्मा से मिलता है. यह बात याद रहे तो हम अपने को कितने भाग्यशाली समझेंगे और इसे भी हमारी खुशी बनी रहेंगी.

तीसरा यह ज्ञान धारण करने से मैं सतयुग में लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनता हूँ, यह बात तो हमारी आत्मा में खुशी के चार चांद लगा देती हैं.

यही ज्ञान में हमने जाना की यह सृष्टि चक्र एक ड्रामा है और उसमें हम सब आत्माये अपना-अपना पार्ट बजाती हैं - यह बात हमें सब परिस्थितियों में हलका बना देती हैं और हमारी खुशी गंवाने नहीं देती.

इस तरह से यह ईश्वरीय ज्ञान का हर पॉइन्ट हमारे लिए खुशियों का खजाना हैं. इसलिए आज भी बाबा आते है तो हम सब से पूछते है - बच्चे, सदा खुश हों? क्योंकि इसे ही मालूम पड़ जाता है की आत्मा ने ज्ञान को कहा तक समझा और धारण किया हैं.

आज बाबा ने ज्ञान की एक और पोइन्ट को समझाते हुए कहा - बच्चे, तुम्हें हठ-योग से ३-४ घंटे या सारी रात बाप की याद में बैठना नहीं हैं.

इस पर विचार-सागर-मंथन करें तो यह बात समझ में आती है की बाबा हमसे किसी भी तरह से अपने शरीर (प्रकृति) को कष्ट देकर हमें बाप को याद करना नहीं सिखाते हैं. बाबा हमें बताते है की सन्यासी और भक्त लोग भगवान को पाने के लिए अपने शरीर को कितना कष्ट देते हैं. अपनी हठ से भगवान को प्राप्त करने की कितनी मेहनत करते रहते हैं. लेकिन वह अपने को सुधारने के लिए या देवी-गुण धारण करने की कोई मेहनत नहीं करते हैं. जब की तुम्हें तो भगवान सामने से आकर मिले है तो उन्हें पाने के लिए या उन्हें याद करने के लिए तुम्हें अब अपने शरीर को कष्ट देने वाली कोई मेहनत नहीं करनी हैं.

बाबा कहते है, तुम बच्चों को मेहनत करनी है ईश्वरीय ज्ञान को स्वयं में धारण करने की. हमें हठ करनी है - स्वयं में देवी-गुणों को धारण करने की या कहे अपने आप को सुधारने की.

जैसे की आज से मुझे किसी को भी अपने मन-वचन-कर्म से दुख नहीं देना हैं या कहे आज से मुझे सदा खुश रहना ही है और दूसरों को भी खुशी बाटनी हैं या कहे कुछ भी हो जाये मुझे सम्पूर्ण पवित्र जरूर बनना ही हैं. ऐसे ही कुछ भी हो जाये पर अन्दर से भी मुझे किसी से नाराज (गुस्सा का सूक्ष्म रुप) नहीं होना हैं. स्वयं में संतुष्टता, धैर्यता को धारण करना ही हैं. हरेक गुणों को धारण करते हमारे में चेक करते चले, यह भी आवश्यक हैं.

ऐसे बहुत से देवी-गुणों को अपने में धारण करने की हठ करनी ही हैं तभी हम परिवर्तन होंगे और इसे ही सारा विश्व भी परिवर्तन होगा.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 17-10-14

अपने सत्य स्वरूप की पहचान देकर, हमें एक की ही याद सिखलाकर पुण्य-आत्मा बनाने वाले, परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने कहा, मीठे बच्चे - एक बाप की याद में रहना ही अव्यभिचारी याद है, इस याद से ही तुम्हारे जन्मो-जन्म के पाप कट जायेंगे और तुम पावन आत्मा बन जायेंगे.

बाबा की हर मुरली में बाबा हमें दो मुख्य बातों का अभ्यास कराते है - १. स्वयं को आत्मा समझ मुझ परमात्मा को याद करों. २. बाप के वर्से को याद करों.

बाबा की आज की मुरली से इन दोनों बातों का अभ्यास कराने वाले महावाक्यों को निकाल कर देही-अभिमानी अवस्था बनाने का और स्वदर्शन चक्रधारी बनने का पुरुषार्थ करेंगे.

१. आत्मिक स्थिति में रहकर परमात्मा को याद करने का अभ्यास जिसे मनमनाभव भी कहते हैं.

- बाबा कहते हैं एक होती है व्यभिचारी याद, दूसरी होती है अव्यभिचारी याद. तुम सबकी है अव्यभिचारी याद. किस की याद है? एक बाप की. बाप को याद करते-करते पाप कट जायेंगे और तुम वहॉ पहुँच जायेंगे.

- पावन बनकर फिर नई दुनिया में जाना है. आत्माओं को जाना है. आत्मा ही इन आरगन्स द्वारा सब कर्म करती है ना. बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो.

- भक्ति भी पहले-पहले हमने ऊंच ते ऊंच शिवबाबा की ही की थी. वही सर्व को सद्गति देने वाला रचता बाप है. उनसे ही हम आत्माओं को बेहद का वर्सा मिलता है.

- बाबा कहते है यहॉ तो तुम सब आत्माये हो. सब आत्माओं का बाप एक है. सब आत्माये भाई-भाई हैं. सबको बाप से वर्सा लेने का हक है.

- हम आत्माये अविनाशी है, तो हमारे में पार्ट भी अविनाशी भरा हुआ हैं. वह कभी विनाश नहीं हो सकता हैं. अभी जो है वही रुप, काल, देश ५००० वर्ष बाद फिर से होगा.

- हम सब आत्माये इस अविनाशी ड्रामा में पार्ट बजा रही हैं. सब आत्माओं को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ हैं. देही-अभिमानी हो, साक्षी हो इस बेहद के खेल को देखना हैं.

- ज्ञान देने वाला तो एक ही बाप ज्ञान-सागर है. बाप आकर हम बच्चों को अर्थात आत्माओं को पढ़ाते है. वह हमारा बाबा भी है, टीचर भी है फिर सतगुरु भी बनते है.

२. आत्मिक स्थिति में रहकर वर्से को याद करो या स्वदर्शन चक्रधारी बनने का अभ्यास करों.

- बाबा कहते है अब तुम जानते हो इस दुनिया से सब आत्माओं को वापस अपने घर जाना ही हैं. जो भी मनुष्य मात्र हैं, सबका पार्ट अब पुरा होता है. फिर बाप आकर तुम्हें पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले जाते हैं, पार ले जाते हैं.

- मूलवतन से लेकर सारी दुनिया का नक्शा हमारी बुद्धि में हैं. हम आत्मायें स्वीटधाम, शांतिधाम की निवासी हैं. जब हम सतयुगी दुनिया में है तो बाकी सभी आत्मायें शान्तिधाम में रहती हैं.

- हम सब आत्मायें रहती है, ऊपर निराकारी दुनिया में. फिर आती है, नम्बरवार पार्ट बजाने. पहले-पहले नम्बर शुरू होता है देवताओं का. सतयुग में पहले चलती है सूर्यवंशी डियनास्टी, फिर है चंद्रवंशी डियनास्टी.

- हम सब आत्माये सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आते हैं तो प्रकृति भी सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आती ही हैं.

- हम आत्मायें पहले-पहले अपने घर स्वीट होम में जाकर फिर नई दुनिया सतयुग में आयेंगे. अभी यह तो पुरानी दुनिया है. ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:18-10-14

इस बेहद के सृष्टि चक्र रूपी ड्रामा का हर राज (razz) हम बच्चों को समझाकर, ड्रामा में हीरो पार्टधारी बनाने वाले, बेहद के डायरेक्टर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - इस ड्रामा में तुम्हें हरेक का पार्ट देखते हुए किसकी भी निंदा नहीं करनी है. क्योंकि तुम जानते हो यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है, इसमें हर एक ऐक्टर अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं. किसी का कोई भी दोष नहीं है. यह भक्ति मार्ग भी फिर से पास होना हैं, इस ड्रामा में जरा भी चेंज नहीं हो सकती.

बाबा ने आज की मुरली में हमें इस बेहद के सृष्टि चक्र रूपी ड्रामा के दो मुख्य राज (razz) समझाये है - १. यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है, इसमें हर ऐक्टर अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं. २. इस ड्रामा में जरा भी चेंज नहीं हो सकती.

ड्रामा के इन दो गुह्य राज को जानकर हमें अपना पार्ट कैसे बजाना हैं?

१. यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है, इसमें हर एक ऐक्टर अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं. - यह बात हमें सिखाता है कि हमें साक्षी होकर इस बेहद के ड्रामा में अपना पार्ट बजाना हैं. किसी का भी पार्ट देखते हुए, हमें अपनी स्थिति को नहीं बिगाड़नी हैं. इसके लिए दो बातें याद रखनी ही हैं. एक है यह बेहद के ड्रामा में हरेक आत्मा ऐक्टर है और अपना-अपना पार्ट बजा रही हैं. दूसरी है इस ड्रामा में पार्ट बजाने वाली सब आत्माये निर्दोष हैं, किसी का भी कोई दोष नहीं हैं. अगर हम कोई भी बात में किसी का दोष देखते है तो अपना ही खाता खराब करते हैं.

२. इस ड्रामा में जरा भी चेंज नहीं हो सकती. - बाबा ने हमें बताया है की यह ड्रामा एक्युरेंट रिपिट होता हैं, जो इस क्षण बिता वही ५००० वर्ष बाद फिर से रिपिट होगा. ये पाईन्ट हमें सिखाता है, अभी जो कर्म हम करेंगे, वही कर्म ड्रामा के अगले साइकिल में फिर से करेंगे, तो अब हमें अपना हर कर्म को श्रेष्ठ बनाना ही हैं. बाकी रहा हुआ ड्रामा में हमारा कोई भी पार्ट चले, कभी किसी बात में दुखी नहीं होना हैं और किसी को भी दुखी नहीं करना हैं.

बाबा की अन्य मुरलीओं से लिए गये, इस बेहद के ड्रामा के अन्य राज (razz), जिसको याद में रखने से हमें अपना पार्ट श्रेष्ठ बनाने में मदद मिलेगी.

- यह ड्रामा बड़ा एक्युरेंट हैं या कहे यह ड्रामा मेरे लिए बहुत-बहुत कल्याणकारी हैं. – बाबा ने कहा है कि हम भाग्यशाली आत्माये कल्प के सारे सृष्टि चक्र में तीन-चौथाई हिस्सा (3/4 part), सतयुग-त्रेतायुग-द्वापर ऐसे तीन युग बहुत-बहुत सुखी रहते हैं. ये पाईन्ट हमें बेहद की खुशी देता है और फिर बेफिक्र भी बनाता हैं.

- इस बेहद के ड्रामा में सब आत्माये नम्बरवार पार्ट बजाने आते हैं. ड्रामा में पार्टधारी आत्माओं के नम्बर में फर्क नहीं हो सकता. -- ये पाईन्ट हमें क्यों-क्या के प्रश्नों से उपराम कर देता हैं.

- ड्रामा टिक-टिक जुई मिसिल चलता हैं. -- यह पाईन्ट हमें इस त्याग और तपस्या के मार्ग पर चलते धैर्यता सिखाता हैं.

- ड्रामा हर सेकेण्ड चेईंन्ज होता हैं. -- यह पाईन्ट हमें साक्षी होकर ड्रामा को देखना सिखाता हैं. अचानक के समय पर ये पाईन्ट हमें अचल-अडोल रहना सिखाता हैं. यह पाईन्ट हमारी स्थिति भी एवर-रेडी (सदा-तैयार) बनाता हैं.

- ड्रामा अंतिम चरण में हैं. यह पुरानी दुनिया अब विनाश होनी है, अब हम अपने बाबा के पास जाते है फिर सतयुग में आयेंगे. -- यह पाईन्ट हमारी बुद्धि को उपराम बना देता है, बेहद का वैराग्य दिलाता हैं. पुरानी दुनिया से नाता तोड़ नयी दुनिया से जोड देता हे.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:19-10-14

ईश्वरीय ज्ञान, गुणों और शक्तिओं से हम आत्माओं को भरपूर कर मास्टर सर्वशक्तिवान बनाकर परमात्म प्रत्यक्षता कराने के निमित बनाने वाले, बापदादा ने कहा, परमात्म प्रत्यक्षता का आधार है सत्यता और सत्यता का आधार है स्वच्छता और निर्भयता.

आज भी लोग कहते है कि ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान, राजयोग अच्छा है, जीवन परिवर्तन करा देता है. लेकिन लोग यह नहीं जानते कि ब्रह्माकुमारीज को यह ज्ञान, गुणों और शक्तिओं से भरपूर करने वाला तो सर्वशक्तिमान, सर्व मनुष्य आत्माओं का पिता, स्वयं परमपिता-परमात्मा शिव हैं. ब्रह्माकुमारीज की प्रशंसाओं के पीछे, उन्हें इस लायक बनाने वाली जो परमात्म शक्ति है उसे नहीं जानते.

बापदादा ने आज की मुरली में यही स्पष्ट किया की अभी हमें ऐसी सेवा करनी ही है की जो देखे, जो सम्पर्क में आ करके सुने, उनके द्वारा यह आवाज निकले की भगवान, स्वयं इस धरा पर आ चुका हैं. उन्हें अहसास हो की स्वयं परमात्मा इन ब्रहमाकुमार-कुमारीज द्वारा कार्य करवा रहा हैं. इसे ही चारों और आवाज फैलेगा, सब धर्मवाली आत्माये कहेगी - "बाप आ गया." इसे ही परमात्मा की प्रत्यक्षता होगी.

- परमात्म प्रत्यक्षता हो इस के लिए क्या धारणा करनी है?

परमात्म प्रत्यक्षता का आधार है सत्यता. सत्यता ही प्रत्यक्षता है. एक है स्वयं के प्रति सत्यता, दूसरी है सेवा के प्रति सत्यता. सत्यता आधार है स्वच्छता और निर्भयता का. सत्यता के आधार से इन दोनों धारणाये हमारे में आयेगी और इसे ही परमात्म प्रत्यक्षता हो जायेंगी.

- किस तरह की हमारे में सत्यता हो?

सत्यता यानी सच्चाई है, मैं जो हूँ, जैसा हूँ - सदा उस ऑरिजिनल सतोप्रधान स्वरूप में स्थित रहना ही हैं. स्वयं की आत्म-अभिमानी स्थिति हो. आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता हैं. बोल और कर्म में भी सच्चाई अर्थात सत्यता की सतोप्रधानता हो. सत्यता नेचरल संस्कार

के रुप में हो. जैसे बाप को टुथ अथवा सत्य कहते है वैसे ही आपकी आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता सत्य और टुथ हो. ऐसी सत्यता को सतोप्रधानता कहा जाता हैं और इसके आधार से हम स्वच्छता और निर्भयता को धारण कर जब सेवा करेंगे तो बाप प्रत्यक्ष हो जायेगा.

- किस तरह की सच्चाई और सफाई हमारे में हो?

सफाई अर्थात स्वच्छता. जरा भी संकल्प मात्र भी अशुद्धि अर्थात बुराई को वा अवगुण को टंच किया वा धारण किया तो सम्पूर्ण सफाई नहीं कहेंगे. जैसे स्थूल में भी कोई प्रकार की गन्दगी को देखना भी अच्छा नहीं लगता, देखने से किनारा कर देंगे, ऐसे बुराई को सोचना भी बुराई को टंच करना हुआ. सुनना और बोलना वा करना यह तो स्वयं ही बुराई को धारण करते हैं. सफाई अर्थात स्वच्छता, संकल्प मात्र भी अशुद्धि न हो.

- बापदादा किस बात में हमारे में निर्भयता देखना चाहते है?

बापदादा हमारे में तीन बातों में निर्भयता धारण कराना चाहते है.

१. अपने पुराने तमोगुणी संस्कार पर विजयी बनने की निर्भयता. क्या करूँ होता नहीं, संस्कार बहुत प्रबल हैं - यह निर्भयता नहीं.

२. अन्य आत्माओं के सम्पर्क और सम्बन्ध में स्वयं के संस्कार मिलाना और अन्य के संस्कार परिवर्तन करना - इसमें भी निर्भयता हो. पता नहीं चल सकेंगे, निभा सकेंगे, मेरा मानेंगे या नहीं मानेंगे इसमें भी अगर भयता है तो इसको भी सम्पूर्ण निर्भयता नहीं कहेंगे.

३. विश्व की सेवा में अर्थात सेवा के क्षेत्र में वायुमण्डल या अन्य आत्माओं के सिद्धान्तों की परिपक्वता को देखते हुए उन्हों की परिपक्वता या वायुमण्डल का प्रभाव पड़ना भी निर्भयता नहीं हैं. यह बिगड़ जायेंगे, हंगामा हो जायेगा, हलचल हो जायेगी इसमें भी निर्भयता हो.

बापदादा कहते है आप आत्म ज्ञानी आत्मायें सारे मनुष्य सृष्टि के कल्पवृक्ष की तना हो, बाकी विश्व की सर्व आत्माये तो मनुष्य सृष्टि के कल्पवृक्ष की शाखाये हैं. आप आत्माये उनके आधार हो तो निर्भय हो कर बाप से मिला श्रेष्ठ मत वा अनादि-आदि सत्य को निःसंकोच होकर प्रत्यक्ष करो. निर्भय बनो.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:20-10-14

अपना परिचय देकर, इस बेहद के ड्रामा में अपना रोल हम आत्माओं को समझाकर, हमें निश्चय बुद्धि बनाने वाले बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम सदा के लिए एक सत के संग में रहो, तुम्हें मायावी कुसंग में नहीं जाना है, कुसंग लगने से ही संशय के रुप में घुटके आते हैं.

सर्व शास्त्र शिरोमणि श्रीमत् भागवत गीता में भी लिखा है कि निश्चय बुद्धि विजयंती, संशय बुद्धि विनश्यती. भगवान कहते है, मैं जो हूँ, जैसा हूँ – उसको ऐक्युरेंट पहचान कर, मेरे में पुरा निश्चय बुद्धि होकर मेरी कही हुई श्रीमत् पर चलते है तो उसका में कल्याण करता हूँ. यही बात प्रैक्टिकल में हम ब्राह्मणों के साथ हो रही हैं. जब हम आत्माये यह ईश्वरीय ज्ञान पहली बार सुनती है तब हमें अंदर से अहसास होता है कि यह ज्ञान कोई भी देहधारी मनुष्य नहीं दे सकता क्योंकि यह ज्ञान में ऐसी कई बातें है जो बिलकुल ही नई हैं. कोई भी वेद-शास्त्रों-उपनिषद या धर्मग्रंथों में यह बात है नहीं. बाबा ने हमें जो आत्मा, परमात्मा और सारी बेहद की सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया है, यह ज्ञान सिवाय स्वयं परमात्मा के और कोई नहीं दे सकता. यह ज्ञान तो उन्हें ही हो सकता है जो इस सारी सृष्टि का रचयिता हैं (रचयिता को ही रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हो सकता हैं). तो हमने बाप को पहचाना है यह ईश्वरीय ज्ञान के आधार से या कहे हमें बाप में निश्चय हुआ है इस ज्ञान के आधार से.

हमारे निश्चय को और पक्का करने के लिए आज बाबा ने ज्ञान की ऐसी कई बातें आज की मुरली में कही है जो हम फिर से रिपिट करेंगे तो हम यही बात औरो को सुनाकर उनका निश्चय भी बाप में पक्का कर सकते हैं.

- बाबा कहते है, बच्चे जब यहॉ बैठते हो तो जानते हो बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है और सतगुरु भी है. पहले बाप, फिर पढ़ाने वाला टीचर और फिर पिछाड़ी में गुरु. बाप को याद भी ऐसे करना है. बच्चों को वन्डर लगता है क्योंकि बिलकुल ही नई बात है ना.

- बाप पुछते है, मीठे बच्चों, जन्म-जन्मान्तर तुम्हें ऐसा कोई मिला है जो कहे मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, टीचर भी हूँ और सतगुरु भी हूँ. एक ही जन्म में यह तीनों ही पार्ट तो एक परमात्मा के सिवाय किसी और आत्मा को नहीं मिल सकता. बाबा का यह पार्ट भी अभी संगमयुग पर ही होता हैं.

- यह फिर है बेहद का बाप, बेहद का टीचर और बेहद का सतगुरु. बेहद का माना सबका. सो है भी सुप्रीम.

- बेहद का बाप फिर नॉलेज भी बेहद की देते हैं. बाप कहते है हद की नॉलेज तो तुम अनेक बार जन्मो-जन्म पढ़ते आये हो, जिसे तुम डॉक्टर, जज, वकील आदि बनते हो. यह बेहद की नॉलेज तो इस सारे कल्प में तुम्हें एक ही बार संगमपर मिलती है जो २१ जन्मो के लिए फलीभूत होती है अर्थात उनका फल मिलता है.

- बाप कहते है सतयुग में डॉक्टर, बैरिस्टर, जज आदि होते ही नहीं, क्योंकि वहाँ दुख नहीं होता, कर्मभोग नहीं होता. सतयुग-त्रेता है ईश्वरीय प्रालब्ध. कर्मभोग होता है द्वापर-कलियुग में. सुप्रीम बाप ही एक्युरेंट कर्मों की गति बैठ तुम्हें समझाते हैं.

- बाप समझाते हैं, मैं तुम्हारा बेहद का बाप अर्थात सभी आत्माओं का बाप हूँ, पढ़ाता भी हूँ आत्माओं को. मुझको अपना शरीर नहीं हैं. मैं लोन लेता हूँ ब्रह्मा के शरीर का. मेरे सिवाय और कोई भी आत्मा अपने को स्प्रीचुअल फाधर अर्थात आत्माओं का बाप (रुहानी बाप) नहीं कह सकते.

- बाप कहते हैं - बच्चे, देही-अभिमानी भव. देह का अभिमान छोड़ो. ऐसे तुमको सारे कल्प में और कोई भी जन्म में और कोई भी आत्मा नहीं कह सकती.

- बाप समझाते हैं, यह मनुष्य सृष्टि रुपी झाड़ है, जिसका बीजरूप मैं हूँ. मैं चैतन्य बीजरूप हूँ. मुझे कहते ही हैं ज्ञान का सागर. मुझ में ही सारे मनुष्य सृष्टि रुपी झाड़ की सारी नॉलेज हैं. मैं ही आकर अभी तुम्हें राजयोग सिखाता हूँ, जिसे तुम राजाओं के राजा बन जाते हो. मैं हूँ सब आत्माओं का बाप. मुझे पहचान ने से ही तुम बच्चों को वर्सा मिलता हैं. ऐसा मेरे सिवाय सारे संसार में और कोई नहीं कह सकता.

- बाप बैठ समझाते हैं, मुझको ही पतित-पावन कहा जाता है. कृष्ण के लिए त्वमेव माता च पिता वा पतित-पावन नहीं गाया जाता. बाप के मर्तबे में और कृष्ण के मर्तबे में रात-दिन का फर्क है. मुझे पहचान ने से तो आत्मा को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है, कृष्ण अगर भगवान होता तो उसे देखते ही कोई भी पहचान ले. कृष्ण का जन्म भी कोई दिव्य अलौकिक नहीं गाया हुआ है, माता के गर्भ से होता है सिर्फ पवित्रता से होता हैं. एक बाप के लिए ही कहा जाता है कि उनका जन्म माता के गर्भ से नहीं होता, बल्कि दिव्य अलौकिक होता हैं.

ॐ शांति.

आज की साकार मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---- Date:21-10-14

हम पदमापदम भाग्यशाली आत्माओं को आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर, सहज योगी और स्वदर्शन चक्रधारी बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, बाबा तुम्हें जो सुनाते हैं, उस एक-एक बात को धारण करने से ही तुम पदमापदम भाग्यशाली बनते हो. बाप जो नॉलेज देते हैं उसे बुद्धि में रखना, स्वदर्शन चक्रधारी बनना ही पदमापदम भाग्यशाली बनना हैं. इस नॉलेज से ही तुम गुणवान बनते हो. बाबा की हरेक मुरली हमें दो मुख्य बातें धारण करवाती हैं. स्वयं को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करना और साथ में आत्मा का स्वदर्शन चक्र को भी फिराना. इसे ही हम सहज योगी और स्वदर्शन चक्रधारी बन जायेंगे. बाबा का दिया हुआ ईश्वरीय ज्ञान को बुद्धि में रखने से ही हम गुणवान आत्मा भी बन जायेंगे.

हमें बाबा की सहज याद सिखलाकर और स्वदर्शन चक्रधारी बनाने वाली कुछ पॉइन्टस को आज की मुरली से निकालकर पढ़ेंगे तो हमें दोनों बातों की प्रैक्टिस होती जायेंगी.

- रुहानी बाप को अंग्रेजी में कहा जाता है स्प्रीचुअल फादर. जब हम आत्माये सतयुग में होगी तो वहॉ अंग्रेजी आदि दूसरी कोई भाषा नहीं होगी. सतयुग में तो हमारा राज्य होगा वहॉ तो हमारी जो भाषा होगी वही चलेगी. फिर बाद में वह भाषा बदलती जायेंगी. अभी कलियुग के अन्त में तो अनेका-अनेक भाषा ये हैं. जैसा-जैसा राजा वैसी-वैसी उनकी भाषा चलती है.

- हरेक मनुष्य के शरीर में आत्मा है. अभी उस आत्मा में ५ विकार प्रवेश हैं. शरीर में नहीं, आत्मा में ५ विकार अथवा भूत प्रवेश होते हैं. जब हम आत्माये सतयुग में है तो वहॉ यह ५ भूत नहीं हैं. सतयुग को कहा जाता है डीटी वर्ल्ड और यह है डेविल वर्ल्ड. कितना दिन और रात का फर्क है.

- अभी हम आत्माये चेंज हो रहे हैं. वहॉ सतयुग में हमारे में कोई भी विकार, कोई अवगुण नहीं रहता. वहॉ हम आत्माये सर्वगुण सम्पन्न सोले कला सम्पूर्ण होते है. फिर धीरे-धीरे हम नीचे उतरते हैं. अब मुझ आत्मा को मालूम पड़ा है कि कैसे यह ८४ का चक्र फिरता है. अब मुझ आत्मा को स्व का दर्शन हुआ है अर्थात यह चक्र का ज्ञान हुआ हैं. अब मुझे यह चक्र को सदा के लिए बुद्धि में रखना हैं.

- रुहानी बाप हमारे भारत में ही आकर हमें यह रुहानी नॉलेज देते है. हमारा भारत जब स्वर्ग था तो हमारा एक ही देवी-देवता धर्म था और कोई भी धर्म नहीं था. यह देहली का नाम भी परिस्तान था. अभी तो नई और पुरानी देहली कहते है. फिर न पुरानी, न नई देहली होगी. इसको तो परिस्तान कहा जायेगा. यहॉ ही लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा, हमारा ही राज्य होगा और कोई राज्य नहीं होगा.

- इस कलियुग के अन्त में हम सब आत्माये पाप आत्माये बन गये हैं. सतयुग में तो थे पुण्य आत्माये. अभी बाबा आये है हमें पाप आत्मा को पुण्य आत्मा बनाने, जिनकी हम शिवरात्रि भी मनाते हैं. बाबा ने हमें समझाया है की शिवरात्रि भी क्यों मनाते है. हम आत्माये इस ५००० वर्स के चक्र में, सुख और दुख के खेल में पार्ट बजाते हैं. सुख को कहा जाता है दिन और दुख को कहा जाता है रात. तो रात और दिन के बिच में आता है संगम. जब की परमात्मा शिव आकर वापस हम आत्माओं को अन्धीयारे से निकाल सोझरे में ले जाते हैं.

- कलियुग में जब बच्चा जन्म लेता है तो पहले बाप से योग होता है फिर ५ वर्ष के बाद टीचर से योग लगाना पड़ता है फिर वानप्रस्थ अवस्था में गुरु से योग लगाना पड़ता है. अब संगम पर बाबा हमारा बाप भी बनते है, टीचर भी बनते है और सतगुरु भी वही बनते हैं. तो तीनों के रुप में हमें एक बाबा को ही याद करना हैं. यह तो मुझ आत्मा के लिए कितना सहज है. फिर सतयुग में बाप से और टीचर से योग होता है वहॉ गुरु की दरकार नहीं रहेगी क्योंकि सब आत्माये सद्गति में हैं.

- कल्प पहले भी बाबा ने कहा था कि मनमनाभव. यह है महामन्त्र, माया पर जित पाने का. बाबा ने हमें इसका भी सही अर्थ समझाया हैं. गाया भी जाता है सर्व का सद्गति दाता एक. वह कोई मनुष्य या देवता नहीं हो सकता. सतयुग में तो सुख ही सुख है तो वहॉ कोई भक्ति करते ही नहीं. भक्ति भी की जाती है भगवान से मिलने के लिए. स्वर्ग में तो हम आत्माये २१ जन्मो का वर्सा भोगते हैं. यहॉ तो है अथाह दुख तो घड़ी-घड़ी कहते है भगवान रहम करो. कलयुगी दुनिया सदैव नहीं रहेगी. सतयुग-त्रेता पास्ट हो गया, फिर होंगे.

इस तरह से बाप और चक्र को बुद्धि में रखने से ही हम पदमापदम भाग्यशाली बनेंगे.
ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 22-10-14

पवित्रता के सागर, पतित-पावन, विश्व में पवित्र दुनिया के रचयिता, परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने कहा, मीठे बच्चे - पवित्रता के आधार से ही तुम्हें स्वर्ग में पीस और प्रासपर्टी मिलती हैं. पवित्रता ही मुख्य धारणा हैं. पवित्रता के कारण ही इन देवी-देवताओं की पूजा होती हैं.

परमात्मा शिव द्वारा स्थापित इस बेहद के ज्ञान-रुद्र-यज्ञ का मुख्य कारण, इस विश्व की सर्व जीवात्माओं और प्रकृति के पांच तत्वों को संपूर्ण पावन बनाकर इस विश्व पर संपूर्ण पवित्र-पावन दुनिया सतयुग की स्थापना करना हैं. इस लिए हमारे यह ब्राह्मण जीवन में पवित्रता धारण करना सबसे मुख्य हैं.

किसे संपूर्ण पवित्र आत्मा कहा जाता हैं?

संपूर्ण पवित्रता यानी जीवन में मात्र ब्रह्मचर्य को पालन करना ही नहीं हैं.

संपूर्ण पवित्र आत्मा यानी

- जिसकी वृति संपूर्ण पावन हो. वृति में रिंचक मात्र भी काम-विकार न हो.
- पावन वृति से अपनी दृष्टि को शुद्ध किया हो.
- स्वप्न में भी अपवित्रता न हो.
- सम्बन्ध-समपर्क में आने वाली सर्व आत्माओं के प्रति भाई-भाई की वृति-दृष्टि हो.
- व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो.
- स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट हो.
- अपने मन-वचन-कर्म से किसी को दुख न देती हो.

संपूर्ण पवित्रता धारण करने की विधि -

- स्वयं को आत्मा समझ परमपिता-परमात्मा शिवबाबा से ज्वालामुखी योग कर, अपवित्रता के संस्कारों को आत्मा में से जला कर भस्म करना हैं.
- ज्ञान का उपयोग कर अपनी वृति को पावन करना हैं. सर्व आत्माओं के तरफ मेरी वृति अंदर से भाई-भाई की रखने की प्रैक्टिस करनी हैं.
- आत्मा में से भय को निकाल, स्व से और परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहना ही हैं.
- व्यर्थ से मुक्त रहने के लिए, फालतू बातों को न सुनना हैं, न बोलना हैं और न देखना हैं.

- नींद में स्वप्न से मुक्त रहने के लिए, बाबा से दस मिनिट योग कर, बाबा की गोदी में सो जाना हैं.
- मन-वचन-कर्म से किसको भी दुख नहीं देना हैं और किसी से दुख नहीं लेना हैं.

संपूर्ण पवित्रता कि स्वयं में चैकिंग ---

- पवित्रता को चेक करने के लिए अपनी वृति को चेक करना हैं. अगर मेरी वृति स्वच्छ हैं तो मेरी आंखें किसी पर ठहरेगी नहीं, आंखें धोखा नहीं देगी. चेक करें की मन-वचन-कर्म से सम्बन्ध-समपर्क में आने वाली सर्व आत्माओं प्रति हमारी वृति भाई-भाई की रहती हैं.
- बाबा ने कहा हैं की व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता हैं. तो हमें ये स्वयं में चेक करना हैं की कहा तक व्यर्थ संकल्पों पर हमारा क़ाबू हैं.
- स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहने वाली आत्मा ही संपूर्ण पवित्र बन सकती हैं. तो स्वयं में चेक करें मैं कितना ऑनेस्ट हूँ.
- इस समय प्रकृति के पांचों तत्व संपूर्ण तमोप्रधान हैं इसलिए जभी मैं पानी पीता हूँ या खाना खाता हूँ, तब बाबा की याद में रह पवित्रता की दृष्टि देकर खाता हूँ.
- स्वप्न में भी अपवित्रता न आये इसलिए सोने से पहले दस मिनिट बाबा को याद कर बाद में सोता हूँ
- चेक करो, मैं किसी भी अन्य आत्मा को अपने मन-वचन-कर्म से दुख तो नहीं देती हूँ.

बाबा ने बताया हैं की पवित्रता ही सुख-शांति की जननी हैं. देवी-देवता ये सब सुखी हैं इसका कारण वह संपूर्ण पवित्र हैं. याद रहे की पवित्रता मेरी पूंजी हैं, जैसे मेरे बचत खाते में रखी हुई पूंजी को मैं संभाल कर रखता हूँ, वैसे ही मुझे अपनी पवित्रता की संभाल करनी हैं.

प्रतिज्ञा --- कुछ भी हो जाये, चाहे अपने मन की स्थिति द्वारा, चाहे अन्य कोई आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायु-मण्डल द्वारा कुछ भी हो जाये, मुझे पवित्रता की धारणा को पूरा पालन करना ही हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:23-10-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को देही-अभिमानी बनने का और याद की यात्रा में रहने का सिखलाकर, तमोप्रधान से सतोप्रधन बनाने वाले, पतित-पावन बाप ने कहा, मीठे बच्चे - याद की यात्रा पर पूरा अटेन्शन दो, इससे ही तुम सतोप्रधान बनेंगे.

बाबा की हर मुरली में बाबा हमें एक मुख्य ड़ायरेक्शन जरूर देते है - मीठे बच्चे, अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो. इस का मूल कारण है हम आत्माओं ने लास्ट ६३ जन्म से देह-अभिमान में रहकर अपना पार्ट बजाया हैं. तो अभी देही-अभिमानी बनने में ही मुश्किलात होती हैं.

देही-अभिमानी अवस्था बनाने के लिए एकाग्रता कि शक्ति का उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनानी हैं. एकाग्रता कि शक्ति का उपयोग कर हमारी अंतर्मुखी अवस्था बनाने के लिए नीचे दिये हुए स्वमानो का उपयोग कर, स्वयं को एक ज्योति स्टार स्वरूप आत्मा के रुप में फील करें यानी बिजरुप अवस्था में रहने का अभ्यास बढ़ाये. जितनी हमारी देही-अभिमानी अवस्था बढ़ती जायेगी उतना हमारे आस-पास शान्ति का वायुमण्डल भी बनता जायेगा.

इस स्वमानो का उपयोग करने से हमारे व्यर्थ संकल्पों भी समाप्त हो जायेंगे.

में आत्मा हूँ. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूँ.

में आत्मा हूँ. शांत और पवित्र स्वरूप हूँ . शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

में आत्मा हूँ. सत्य हूँ. चैतन्य हूँ. आनंद स्वरूप हूँ.

में आत्मा हूँ. अजड हूँ, अमर हूँ, अविनाशी हूँ.

में आत्मा हूँ. चैतन्य शक्ति हूँ. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूँ.

में आत्मा हूँ. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

अब हम अपनी देही-अवस्था में रहकर, बाबा की आज कि मुरली से निकाले गये कुछ महावाक्यों को मन में ही पढ़ेंगे (मुख से बोले बिना). इसे हमें आत्म-अभिमानी अवस्था में रहकर बाबा को याद करने की प्रैक्टिस होगी.

- बाबा, हम जो सतोप्रधान थे सो तमोप्रधान बने हैं, फिर आपकी ही श्रीमत् को अनुसरण कर वापस हमको सतोप्रधान जरूर बनना हैं.

- बाबा, आप तो हो ही कल्याणकारी. आप हम पर कितनी मेहर करते हो जो हमें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का ड़ायरेक्शन देते हो.

- बाबा, आप कितने निरहंकारी हो, अपने को हमारा मोस्ट ओबीडियन्ट सर्वेन्ट कहते हो. आप हमारे लिए कितनी मेहनत करते हो.

- बाबा, आप ही पतित-पावन भी हो. आपको याद करने से ही, यह योग अग्नि से ही हमारे जन्म-जन्मांतर के पाप भी भस्म होते हैं.

- बाबा, आप ही मुक्ति-जिवनमुकित दाता हो. बाबा, हमारे सब बन्धन खलास करो. हमें मुक्ति-जिवनमुक्ति प्रदान करो.

- मेरे मीठे-मीठे बाबा, आप कितने मीठे हो. हमें आपके जैसा मीठा बना दो.

- बाबा, हम आपकी डायरेक्शन अनुसार जरूर चलेंगे. हर कर्म करते बाप को अंदर ही अंदर याद करते रहेंगे. माया कितना भी माथा मारे पर हम तो श्रेष्ठ बाप को जरूर याद करेंगे.

- बाबा, आप ही गति-सद्गति दाता हो. आप ही हमें गति-सद्गति देते हो. हमने अब ८४ जन्मो का चक्र पुरा किया है. अब आपके साथ वापस घर जाना हैं. फिर सतयुग में आना हैं.

इस तरह से बाबा की खूब महिमा करते बाबा की याद में रहने से ही हम आत्माये तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगी.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:24-10-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को ज्ञान और योग सिखलाकर, सर्व-गुण सम्पन्न, सोलेकला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी देवी-देवता बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप आया है तुम्हें गुल-गुल (फूल) बनाने, तुम फूल बच्चे कभी किसी को दुख नहीं दे सकते, सदा सुख देते रहो.

इस ईश्वरीय विश्व-विधालय में पढ़ाई करने वाली हरेक आत्मा का लक्ष्य हैं - मनुष्य से देवी-देवता बनना.

इसका सबसे पहला पाठ है स्वयं को आत्मा समझना और दूसरों को भी आत्मा भाई समझकर व्यवहार में आना यानी दूसरों के प्रति आत्मिक भाव रखना. जब मैं आत्मा दूसरों को आत्मा समझकर व्यवहार में आता हूँ तो सामने वाले के प्रति मेरा दृष्टिकोण बदल जाता है. क्योंकि मुझे मालूम है कि हर आत्मा उसके ओरिजिनल दिव्य-गुणों, पवित्रता, सुख, शांति, आनंद, और प्रेम से भरपूर हैं. भल यह बात दूसरों को मालूम नहीं है लेकिन मुझे यह बात स्वयं परमपिता-परमात्मा शिव ने बताई हैं. अगर इतनी बात भी मेरे ध्यान में रहे तो फिर मैं किसी को भी अपने मन-वचन-कर्म से दुख नहीं दूँगा.

इस ईश्वरीय पढ़ाई का एक और पाठ हैं - ड्रामा. अगर यह याद रहे की हरेक आत्मा इस सृष्टि चक्र के ड्रामा में ऐक्टर हैं और अपना-अपना पार्ट बजा रही हैं. यह ड्रामा का ज्ञान मुझे माया के हरेक वार से सेफ (safe) रखेगा. ड्रामा का ज्ञान मुझे सदा अचल-अड़ोल, निर्विघ्न बना देगा.

बाबा ने हमें जो भी श्रीमत् दी है उसे पालन करते रहने से ही हम माया से सदा बचे रहेंगे.

हमारा लक्ष्य है - मनुष्य से देवी-देवता बनना, तो हमें देवी-गुण भी अपने में धारण करना पड़े. बाबा कि मुरलीओं से निकाले गये कुछ मुख्य देवी-गुणों को आज हम पढ़ेंगे तो हमें उसे अपने में धारण करने में मदद मिलेगी.

सत्यता -- सत्यता यानी सच्चाई हैं, मैं जो हूँ, जैसा हूँ - सदा उस ओरिजिनल सतोप्रधान स्वरूप में स्थित रहना ही हैं. स्वयं की आत्म-अभिमानी स्थिति हो. आत्मा की सत्यता सतोप्रधानता हैं. बोल और कर्म में भी सच्चाई अर्थात सत्यता की सतोप्रधानता हो. सत्यता नेचरल संस्कार के रुप में हो. जैसे बाप को टुथ अथवा सत्य कहते है वैसे ही मेरी आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता सत्य और टुथ हो.

सफाई अर्थात स्वच्छता -- जरा भी संकल्प मात्र भी अशुद्धि अर्थात बुराई को वा अवगुण को टंच किया वा धारण किया तो सम्पूर्ण सफाई नहीं कहेंगे. जैसे स्थूल में भी कोई प्रकार की गन्दगी को देखना भी अच्छा नहीं लगता, देखने से किनारा कर देंगे, ऐसे बुराई को सोचना भी बुराई को टंच करना हुआ. सुनना और बोलना वा करना यह तो स्वयं ही बुराई को धारण करते हैं. सफाई अर्थात स्वच्छता, संकल्प मात्र भी अशुद्धि न हो.

निर्भयता -- अपने पुराने तमोगुणी संस्कार पर विजयी बनने की निर्भयता. अन्य आत्माओं के सम्पर्क और सम्बन्ध में स्वयं के संस्कार मिलाना और अन्य के संस्कार परिवर्तन करना.

मास्टर दुःख हरता – सुख करता -- किसी भी अन्य आत्मा के दुःख को स्वयं का दुख समझकर, उसे दूर करने का पुरा पुरुषार्थ करना. इसी देवी-गुण के आधार पर ही आज भी भक्त देवी-देवताओं के पास जाते है अपना दुःख दूर कराने. इसमें ध्यान रहें कि किसी का दुःख देखकर, स्वयं को दुःखी नहीं बनाना लेकिन बाबा की श्रीमत् के आधार पर ही अन्य आत्मा के दुःख को दूर करने का पुरा पुरुषार्थ जरूर करना. इसी से ही ऊंच पद प्राप्त होगा.

गुण-ग्राही और पर-उपकारी -- बाबा ने कहा है बाबा का हर एक बच्चा विशेष आत्मा है तो सदा दूसरों में रही विशेषताओं को ही देखो. किसी का कोई अवगुण नजर भी आता है तो पर-उपकारी बन किसी की भी कमजोरी वा अवगुण को देखते अपनी शुभ भावना से, सहयोग की कामना से अवगुण को देखते उस आत्मा को भी गुणवान बनाने की शक्ति का दान देना.

दीपावली की आप सब को खुब-खुब बधाई हो, बधाई हो.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:25-10-14

हम आत्माओं को यह पुरानी कलयुगी दुनिया और नई सतयुगी दुनिया का फर्क समझा कर, देही-अभिमानी बनने का, पवित्रता का और पुरानी दुनिया से वैराग्य का पाठ सिखलाने वाले बेहद के टीचर-बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप तुम्हें सारे विश्व पर जीत पाने वा विश्व में शान्ति स्थापन करने के लिए कितनी सहज युक्ति बताते हैं. काम पर जीत पाने से तुम २१ जन्मो के लिए जगत जीत बनते हो.

यह तो हम सब जानते है कि बाबा आये है पुरानी दुनिया का विनाश करायें, नई सतयुगी दुनिया कि स्थापना करने के लिए. बाबा हम आत्माओं को नई दुनिया के लायक बनाने के लिए हमें तीन मुख्य धारणाओं के पाठ पढ़ाते है - देही-अभिमानी बनने का, पवित्रता का और बेहद के वैराग्यता को धारण करने का. बाबा की आज की मुरली से यह तीनों बातों को धारण करने के लिए कहे गये कुछ महा-वाक्यों को अलग-अलग करके पढ़ेंगे तो हमारे में तीनों को धारण करने का उमंग-उत्साह बढ़ेगा.

देही अभिमानी बनने के लिए कहे गये महा-वाक्यों -

- बाबा कहते है, तुमको कहा जाता है रुहानी बाप की रुहानी सेना. बाबा तुम्हें बाप से योग लगाकर रावण पर जीत पाने का कितना सहज पुरुषार्थ कराते है. इसको कहा जाता है गुप्त वारियर्स, गुप्त महावीर. पांच विकारों पर जीत पाते हो. इसमें भी पहले है - देह अभिमान. बाप तुम्हें सारे विश्व पर जीत पाने वा विश्व में शान्ति स्थापन करने के लिए कितनी सहज युक्ति बताते हैं. तुम विश्व में शांति का राज्य स्थापन कर रहे हो.

- बाबा कहते है, कलियुग घोर अन्धियारा है. कितना लड़ाई-झगड़ा मारा-मारी है. सतयुग में यह होती नहीं. तुम अपना राज्य देखो कैसे स्थापन कर रहे हो. इसमें कोई हाथ-पाव नहीं चलाते हो, इसमें देह का भान तोड़ना है. घर में रहते हो तो भी पहले यह याद करो - हम आत्मा हैं, देह नहीं. हम आत्माये ८४ जन्म भोगती है. यह हमारा अन्तिम जन्म है. पुरानी दुनिया अब खत्म होनी ही हैं.

- बाबा कहते है, तुम्हारा एम ऑबजेक्ट भी सामने है - लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनने का. इसके लिए सिर्फ तुम्हें देह-अभिमान छोड़ अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करना है जिसे तुम्हारे पाप कट जाये.

पवित्रता की धारणा के लिए कहे गये महा-वाक्यों -

- बाबा कहते है, मीठे-मीठे बच्चों - काम पर जीत पाने से तुम २१ जन्मो के लिए जगत जीत बनते हो. वहॉ अशान्ति, दुख, रोग का नाम निशान नहीं होता.
- बाबा कहते है, मैं तुमको विश्व की बादशाही देने आया हूँ. तो तुम्हें अब पावन जरूर बनना पड़े. सो यह मृत्युलोक का अन्तिम जन्म पवित्र बनो.
- बाबा कहते है, सतयुग में तुम सम्पूर्ण निर्विकारी थे यहॉ हे सम्पूर्ण विकारी. अब तुम्हें स्वर्ग की स्मृति आई है तो अब गंदी बातें मत सूनो, मुख से बोलो भी नहीं.
- बाबा कहते है, पवित्र नहीं बनेंगे तो पवित्र दुनिया स्वर्ग में नहीं आयेंगे. यही भारत स्वर्ग था, कृष्णपुरी में था, अभी नर्कवासी में है. तो तुम बच्चों को खुशी से विकारों को छोड़ना चाहिए. अभी वैकुण्ठ में जाने के लिए पवित्र जरूर बनना है राजयोग से.
- बेहद के बाप कहते है - बच्चे, पवित्र बनो तो तुम सदा सुखी बनेंगे. सतयुग है अमरलोक, द्वापर-कलियुग है मृत्युलोक.

<u>वैराग्यता की धारणा के लिए कहे गये महा-वाक्यों</u> -

- बाबा कहते है, यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया. पाप आत्माओं की दुनिया में करोड़ों आदमी है. पुण्य आत्माओं की दुनिया में होते है ९ लाख से शुरु. वहॉ तुम विश्व के मालिक बनते हो.
- बाबा कहते है, इस पुरानी दुनिया का विनाश सामने तैयार है. यह बॉम्ब्स आदि घर बैठे ऐसे छोड़ेंगे जो सारी दुनिया खलास कर देंगे. तुम बच्चे योगबल से विश्व के मालिक बन जाते हो. तुम शांति स्थापन कर रहे हो योगबल से. वह सारी दुनिया खत्म कर देंगे साईन्स बल से. वह तुम्हारे सर्वन्ट है. तुम्हारी सर्विस कर रहे है. यह सारी प्रकृति भी तुम्हारी गुलाम बन जाती है. सिर्फ तुम बाप से योग लगाते हो. तो तुम बच्चों के अन्दर बड़ी खुशी होनी चाहिए.
- बाबा कहते है, तुम बच्चे समझते हो अब हम को वापस जाना है. बाप आया है घर ले जाने के लिए. पाप आत्माये तो शांतिधाम-सुखधाम में जा नहीं सकेगी. वह तो रहती है दुखधाम में इसलिए अब बाप कहते है मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जाएं.

ॐ शांति.

आज की अव्यक्त मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ----- Date:26-10-14

समाप्ति का आधार है विजयी रत्न आत्माओं की सम्पन्नता पर.

आज भी कई आत्माये यह बात पर मुझती है की विनाश कब होगा? या सतयुग कब आयेगा? या कब तक बापदादा का पार्ट चलेगा? आज की अव्यक्त मुरली में यही प्रश्नों के उत्तर बापदादा ने दिये हैं.

बापदादा ने मुरली के शुरुआत में कहा - हरेक बच्चे के अन्दर विशेष उमंग है - स्वयं को सम्पन्न बनाकर विश्व का कल्याण करने का (यानी बच्चों में उमंग है सतयुग में जाने का).

बापदादा ने आगे कहा, इसके लिए बच्चों के अन्दर जो छोटी-छोटी कमजोरियां रही हुई है उसको सदा-काल के लिए समाप्त करना होगा और इसका साधन है विदाई की हुई कमजोरियों से अनुभव हुई बधाई को हर रोज अमृतवेले स्मृति में लाकर समर्थी स्वरूप बनना. जितना हम स्वयं समर्थी स्वरूप बनते जायेंगे उतना हम अपनी रही हुई कमजोरियों को भी समाप्त कर पायेंगे. जितना हम स्वयं समर्थी स्वरूप बनते जायेंगे उतनी सेवा में भी हम समर्थी स्वरूप होंगे.

एक और विनाशकारी गृप, साइन्स की ऑथोरिटि से विश्व की अनेक आत्माओं को शारीरिक और मानसिक पिड़ाओं से बचाकर सेकण्ड में अपना शरीर छोड़ दे इसके लिए सहज साधन बना रहे हैं. ऐसे बाबा के बेहद के कार्य में निमित बनी हुई हम मास्टर ऑलमाईटि ऑथोरिटि गृप की आत्माओं को, सारे विश्व की आत्माओं को जन्म-जन्मान्तर के लिए माया के बन्धन से, माया द्वारा प्राप्त हुए अनेक प्रकार के दुखो से, एक सेकण्ड में मुक्त करने (मुक्ति में जाने वाली आत्माओं के लिए) वा सदा-काल के लिए सुख-शांति का (जीवनमुक्ति में जाने वाली आत्माओं क लिए) वरदान देने, हरेक आत्मा को ठिकाने लगाने के लिए एवररेडी रहना हैं. ऑडर मिला और कार्य सम्पन्न हुआ. जब ऐसे स्थापना का कार्य करने वाली आत्माये सम्पन्न हो जायेंगे तो विनाशकारीयों को भी ऑडर मिल जायेगा.

ब्रहमाबाप और शिवबाप के बिच में हुई आपस की रुह-रिहान से यही समझ होती है की,

- मुक्ति का गेट खोलने के जवाबदार तो ब्रह्मा बाबा है लेकिन उन्हें शिवबाबा से परमीशन लेनी हैं.

- मातेले और सौतेले बच्चों के दुखों को देख ब्रहमाबाप को रहम आता है पर शिवबाप उन्हें समझाते है कि अभी भी ब्रहमाबाप के साथ भिन्न-भिन्न स्वरूप से साथ और सम्बन्ध में रहने वाली श्रेष्ठ विजयी रत्न आत्माये तैयार नहीं हुई है या सम्पन्न नहीं बनी हैं. इसलिए मुक्ति के गेट नहीं खुले.

ब्रहमाबाप के साथ-साथ मुक्ति के गेट का उद्घाटन करने वाले, ब्रह्मा बाप के संकल्प को पुरा करने वाले, श्रेष्ठ विजयी रत्न आत्माओं का कर्तव्य --

अभी विश्व की मैजोरिटी आत्माये आत्मिक शांति और सत्यता की खोज में दर-दर भटक रही हैं. ऐसी आत्माये प्राप्ति की प्यासी है. ऐसी प्यासी आत्माओं को आप ज्ञान कलश धारी आत्माये, आत्मिक परिचय और परमात्म परिचय की यथार्थ बूंद पिलाकर तृप्त करो. इसलिए ज्ञान अमृत कलश सदा साथ रखो और सर्व को ज्ञान अमृत पिलाकर अमर बनाते चलो. अमर भव के वरदानी मूर्त बनो.

दूसरी कई कमजोर ब्राह्मण आत्माये, अपने पुरुषार्थ में अति कमजोर हैं. ऐसी कमजोर आत्माओं में पुरुषार्थ करने की भी हिम्मत नहीं हैं. ऐसी आत्माओं को स्वयं की शक्तिओं द्वारा समर्थ बनाकर प्राप्ति कराओ.

इस कार्य में सफलता मूर्त बनने के लिए, एक ही भाषा हो, सर्व के प्रति संकल्प से, वाणी से वरदानी भाषा हो. वरदानी मूर्त हो, वरदानों की वर्सा के भाषण हो. जो भी सुने वह कहे भाषण नहीं वरदानों के पुष्पों की वर्सा हो रही हैं. तब ब्रहमाबाप के साथ मुक्ति के गेट खोलने के जवाबदार बनेंगे. ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:27-10-14

हम आत्माओं को ज्ञान और योग की सही समझ देकर, योग का महत्व समझाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, ज्ञान और योग दो चीजें हैं. याद की यात्रा (योग) से ही तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होते हैं, तुम आत्माये पावन सतोप्रधान बन जायेंगे, बाकी ज्ञान तो है कमाई.

इस ईश्वरीय पढ़ाई के चार मुख्य सबजेक्ट्स है - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा. इन चारों में ज्ञान मुख्य है, क्योंकि ज्ञान से हमें समझ मिलती है आत्मा, परमात्मा और सारे सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त की. ज्ञान का उपयोग कर के ही हम आत्माये, परमात्मा से योग लगाती है. वैसे ही धारणा और सेवा भी ज्ञान से ही करते हैं.

ज्ञान मुख्य सबजेक्ट है लेकिन योग का महत्व ज्ञान से भी ज्यादा हैं. योग के आधार से ही, १. हम आत्माओं के जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होते हैं. २. योग से ही हम आत्माये सतोप्रधान बनती हैं. ३. योग से ही हम आत्माये, पाप-आत्मा से पुण्य-आत्मा बनती हैं. ४. योग से ही स्वर्ग में ऊंच पद प्राप्त होता हैं. ५. योग से ही आत्मा दिव्य-गुणों और शक्तिओं से भरपूर बनती हैं. ६. योग से ही शक्तिमान बनी आत्माओं के लिए सब ईश्वरीय धारणाये सरल हो जाती हैं. ७. सेवा में भी ज्ञान की तलवार पर, योग का जोहर लगने से ही सफलता मिलती हैं. ८. हम आत्माओं को योग में ही माया विघ्न ड़ालती हैं. हमारा माया से युद्ध भी योग में ही होता हैं. अगर हम माया पर जीत पाकर बाबा से अच्छा योग लगाते है तभी हमें मायाजीत आत्मा का टाईटल मिलता हैं. ९. योग से ही हम सारे विश्व की आत्माओं और प्रकृति के पांच तत्वों की मनसा सेवा कर सकते हैं.

बाबा ने कहा, ज्ञान तो तुम किसी को भी समझा सकते हो लेकिन योग को थोड़े ही समझा सकेंगे. ज्ञान है विस्तार, योग है सार. ज्ञान तो तुम बहुत देते हो, योग के लिए तो सिर्फ कहेंगे अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो.

बाबा ने आज सारी मुरली से योग के महत्व को समझाने के लिए जो महा-वाक्यों उच्चारे उसे हम अपनी आत्मिक स्थिति में रहकर पढ़ेंगे तो बाबा से अच्छे योग का अनुभव करेंगे.

- बाबा पूछते है, मीठे बच्चों - अपने को रुह या आत्मा समझ यहॉ बैठे हो? अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना - उनको ही महावीर कहा जाता हैं.

- बाप कहते है, हमेशा अपने से पूछते रहो कि हम आत्म-अभिमानी बने हैं? अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने से ही हम सुप्रीम आत्मा बनते हैं. सुप्रीम अर्थात शक्तिमान वा महावीर.

- बाबा कहते है, तुम बच्चे अभी ईश्वरीय सर्विस पर हो. तो तुम्हें सबको यही बताना है की बाप सिर्फ कहते हैं मनमनाभव अर्थात अपने को आत्मा समझ शिवबाबा को याद करो.

- बाबा कहते है, याद की यात्रा से ही तुम पापों को भस्म कर पावन होंगे.

- बाबा कहते है, तुम्हारी ज्ञान की तलवार में याद का जोहर भरने से ही औरो को ज्ञान का तीर लगेगा.

- बाबा कहते है, दिन-प्रतिदिन जितना याद की यात्रा को बढ़ाते रहें, इसमें तुम्हारा ही कल्याण है. जितना याद में रहेंगे उतना तुम्हारी कमाई होगी.

- बाबा कहते है, यहॉ तुम्हारा स्नान होता है याद की यात्रा से. योग का स्नान है. जिससे पाप कटते हैं.

- बाबा कहते है, बाप को याद करते-करते शरीर छोड़ेंगे तो ऊंच पद पायेंगे.

- बाबा कहते है, याद से ही तुम पुण्य-आत्मा बनेंगे. तुम्हारी आत्मा पवित्र बन जायेगी.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 28-10-14

आत्मा, परमात्मा और सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर हमें मास्टर ज्ञान-सागर बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप तुम्हें जो नॉलेज देते हैं, इसमें कोई रिद्धि-सिद्धि की बात नहीं. यह तो है पढ़ाई, जिसे तुम्हें ऐक्यूरेंट पढ़कर फिर धारण करना हैं. इसमें कोई छू मन्त्र से काम नहीं चलता है.

ज्ञान-सागर बाप ने हमें जो नॉलेज दी है, उसके तीन मुख्य भाग हैं - आत्मा, परमात्मा और सारे सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान.

आज की बाबा की सारी मुरली पढ़ाई पर हैं. तो मुरली से इन तीन टॉपीक पर कुछ पॉइन्टस निकालकर, उस पर विचार-सागर-मंथन करेंगे तो बहुत अच्छे-अच्छे ज्ञान-रतन निकाल सकते है जो हम पहले अपने में धारण कर दूसरों को सुनावे तो अच्छी सेवा होगी.

<u>आत्मा पर कहे गये बाबा के महा-वाक्यों</u> --

- तुम आत्माये यहॉ पार्ट बजाने आते हो तो तुम्हें शरीर मिलता हैं. वह है शिव, तुम हो सालिग्राम. शिव और सालिग्रामों की पूजा भी होती है क्योंकि चैतन्य में होकर गये हैं.
- तुम आत्माये जब यहॉ शरीर धारण करती हो तो तुम्हारा नाम रखा जाता है. आत्मा अविनाशी है शरीर विनाशी है. आत्मा एक शरीर छोड़, दूसरा जाकर लेती है.
- आत्मा ही ८४ जन्म लेकर यहॉ पार्ट बजाती हैं.
- तुम्हारी आत्मा में सतयुग में जो शक्ति थी वह आहिस्ते-आहिस्ते, जन्म-बाय-जन्म डिग्रेड़ होती जाती हैं अर्थात आत्मा में जो सतोप्रधान शक्ति थी वह तमोप्रधान हो जाती हैं. पहले जो सतोप्रधान विश्व के मालिक थे, अभी तमोप्रधान है तो ताकत कम हो गई है. शक्ति नहीं रही हैं. अभी तुम्हारी आत्मा को ताकत मिलती है सर्वशक्तिमान बाप से.

<u>परमात्मा पर कहे गये बाबा के महा-वाक्यों</u> --

- बाबा ने कहा, जब यहॉ आते है तो बच्चों को बुद्धि में होना चाहिए की हम पढ़ाई पढ़ने के लिए जाते हैं. पढ़ाने वाले को टीचर कहा जाता हैं. भगवानुवाच है भी एक गीता. गीता पढ़ाने वाले का पुस्तक है, परन्तु पुस्तक आदि कोई पढ़ाते नहीं हैं. इनके हाथ में कोई गीता आदि कुछ भी नहीं हैं. यह तो है स्वयं शिव भगवानुवाच.

- मनुष्य (कृष्ण, राम आदि) को भगवान नहीं कहा जाता. सब मनुष्यों का भगवान तो एक ही है ऊंच ते ऊंच. एक को ही कहा जाता है सर्व शक्तिमान, वर्ल्ड ऑलमाईटी ऑथोरिटी. वही ऑथोरिटी का अर्थ तुम्हें समझाते हैं.
- उनको कहा जाता है सुप्रीम सोल. सभी मनुष्य आत्माओं का बाप को बाबा कहेंगे. बाबा का नाम है शिव. परमात्मा शिव को ही निराकार कहा जाता है. उनका कोई शरीर नहीं.
- ऊंचे ते ऊंच तो एक ही भगवान है. वह है निराकार और उनकी महिमा बिल्कुल अलग है.
- बाप खुद आकर अपना परिचय देते है, कहते है मैं सारे चक्र में एक ही बार आकर इनमें प्रवेश करता हूँ. तुम बच्चे जानते हो, उनको ही सर्वशक्तिमान कहते हैं.

सृष्टि चक्र के ड्रामा पर कहे गये बाबा के महा-वाक्यों --

- मूलवतन, सूक्ष्मवतन और स्थूलवतन - यह है सारी युनिवर्स. खेल कोई मूलवतन या सुक्ष्मवतन में नहीं चलता है, नाटक सारा यहाँ ही चलता है. इनको कहा जाता है ८४ के चक्र का नाटक. यह बना-बनाया खेल है.
- अभी सब मनुष्य है तमोप्रधान, इसको कहा जाता है कलियुग. अभी है ही नर्क तो कोई भी मनुष्य ऐसे नहीं कह सकता कि यहाँ ही हमारे लिए स्वर्ग है, क्योंकि हमारे पास बहुत धन दौलत है. यह हो नहीं सकता. सतयुग पास्ट हो गया, इस समय नहीं हो सकता.
- सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था. भारतवासी उस समय सतयुगी कहलाते थे. अभी जरूर कलयुगी कहलायेंगे.
- सतयुग को योगी दुनिया और कलियुग को भोगी दुनिया कहेंगे. वहाँ है योगी क्योंकि विकार का भोग-विलास नहीं हैं.
- यह तो स्कूल है. स्कूल में कोई जादू, छू मन्त्र वा रिद्धि-सिद्धि की बात नहीं. यहाँ तुम्हारा लक्ष्य है लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनना. इसके लिए पवित्र जरूर बनना पड़े. यह है ही पतित दुनिया तो इसे वैराग्य भी जरूर चाहिए.
- सतयुग में देवताये होते है, यहाँ है मनुष्य. देवताओं की पूजा होती है क्योंकि वह सर्वगुण सम्पन्न, पवित्र पूज्य थे. सारे विश्व के मालिक थे. अपवित्र ही सदैव पवित्र को पूजते हैं.
- सतयुग को कहा जाता है सच-खण्ड, सब सच बोलने वाले होते हैं. भारत को सच-खण्ड कहा जाता है. झूठ-खण्ड ही फिर सच-खण्ड बनता है. सच्चा बाप ही आकर सच-खण्ड बनाते है. उनको सच्चा पातशाह, टुथ कहा जाता है. ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:29-10-14

हम बच्चों को हर रोज ज्ञान-अमृत पिलाकर आत्म-अभिमानी बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारी याद की यात्रा बुद्धि की है, इसे ही रुहानी यात्रा कहा जाता है, तुम अपने को आत्मा समझते हो, शरीर नहीं, शरीर समझना अर्थात उलटा लटकना.

परमपिता-परमात्मा द्वारा स्थापित यह रुहानी विधालय में हमें तीन बातों का ज्ञान दिया जाता है - मैं कौन? मेरा कौन? और मुझे क्या करना है?

मैं कौन? – मैं आत्मा हूँ. यह बात हमारे मन में पक्की करना. वैसे मन तो आत्मा की सूक्ष्म कर्मेन्द्रिय है. लेकिन द्वापर से जब माया का राज्य शुरु होता है तो माया क्या करती है? माया आत्मा को धीरे-धीरे काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार जैसे विकारों में फँसाती जाती है और उसके लिए सबसे पहले आत्मा की यह सूक्ष्म कर्मेन्दियां, मन और बुद्धि को अपने तरफ कर लेती हैं. फिर हमारा मन, आत्मा के नियंत्रण में न रहकर माया के नियंत्रण में चला जाता है और समझता है मैं यह शरीर हूँ. माया बुद्धि को भी भ्रष्ट कर देती हैं. बुद्धि में सत्य को परख ने की शक्ति खत्म हो जाती है और माया के नियंत्रण में आकर अपने सत्य स्वरूप आत्मा को भूल कर, मैं यह शरीर हूँ यही मान कर चलता हैं. इसको कहा जाता है - देह-अभिमानी. अभी यह ईश्वरीय ज्ञान मुझे वापस आत्म-अभिमानी बना रहा हैं.

मेरा कौन? - अभी संगमयुग में परमात्मा स्वयं आकर हमारी सोई हुई आत्मा को जगाते हैं और कहते है - हे आत्मा, तुम राजा हों. मन और बुद्धि तो तुम्हारी कर्मेन्दियां हैं यानी तुम्हारे कर्मचारी हैं. हे आत्मा - मैं तुम्हारा पिता हूँ. हे आत्मा - जब तुम मेरे पास अपने घर परमधाम में थी तो कितनी सुंदर, निर्विकारी थी. अब माया ने तुम्हारा कितना बुरा हाल कर दिया है. तुम यह माया के चुंगल में फँसकर सम्पूर्ण काली, विकारी बन गई हो. तुम अपने राजाई को भी गँवा चुके हो. अब तुम मेरे साथ योग लगाकर वापस सम्पूर्ण निर्विकारी बन जाओ. हे आत्मा - मैं रचयिता हूँ. तुम

मेरा कहा मानकर मेरी श्रीमत् पर चलोगे तो में तुम्हें अपनी रचना - सतयुग और त्रेतायुग - का मालिक बनाऊँगा. वहाँ तुम्हें कोई विकार परेशान नहीं करेंगे. तुम अपना मनुष्य जीवन में सम्पूर्ण निर्विकारी रहकर, सुख-शांति से बिताओगे.

मुझे क्या करना है? - रचयिता बाप ने मुझे आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान दिया हैं. बाबा ने बताया कि मैं आत्मा जब बाबा के पास परमधाम में थी तो सर्वगुण सम्पन्न, सोलेकला सम्पूर्ण पवित्र और सम्पूर्ण निर्विकारी थी. मैंने इस सृष्टि चक्र के शुरुआत में सतयुग में पहले-पहले अपना पार्ट बजाना शुरु किया तभी में सर्वगुण सम्पन्न, सोलेकला सम्पूर्ण पवित्र और सम्पूर्ण निर्विकारी थी. सतयुग-त्रेता, दो बड़े युग में आत्मा ने सम्पूर्ण सुख और शांति में रहकर अपना पार्ट बजाया. फिर जैसे-जैसे सतयुग-त्रेता में और जन्म लेती गई तो मेरी पवित्रता थोड़ी-थोड़ी कम होती गई. फिर ड्रामा अनुसार जब द्वापर से माया का राज्य चालू हुआ तो में आत्मा विकारों में फँसती गई. कलियुग के अन्त में मैं आत्मा सम्पूर्ण विकारी बन गई और मेरे सब गुणों और शक्तियां क्षीण हो गई. अब मेरे पिता ने आकर मेरा हाथ अपने हाथों में लिया हैं. उन्होंने मुझे वापस सर्वगुण सम्पन्न, सोलेकला सम्पूर्ण पवित्र और सम्पूर्ण निर्विकारी बनने का रास्ता बताया है. वह सर्वशक्तिमान बाप ने मुझे याद की यात्रा सिखलाकर वापस मुझे दिव्य-गुणों और आत्मिक शक्तियों से भरपूर कर रहे हैं. बाबा ने मुझे राजयोग का ज्ञान देकर वापस अपनी ही कर्मेन्दियो, मन और बुद्धि पर राज्य करना सिखाया हैं. अब मैं आत्मा वापस बाबा की श्रीमत् पर चल कर अपने में देवी-गुणों को भी धारण कर रही हूँ.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:30-10-14

पुरुषोत्तम संगमयुग पर सदा हम बच्चों के साथ रहने वाले और परमधाम में भी हमारे पास रहने वाले, बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बेहद की अपार खुशी का अनुभव करने के लिए हर पल बाबा के साथ रहो.

आज बाबा ने हम बच्चों की झोली खुशियों के खजानों से भर दी हैं. आज की मुरली में बाबा ने हम बच्चों प्रति बहुत सारे महा-वाक्यों कहे है जिसे पढ़ कर ही हमारी आत्मा अपार खुशी का अनुभव करेगी. बाबा ने कहा है की सदा खुशी में रहना हो तो सदा एक बाप के संग में रहो. बाबा का साथ सारे दिन में अनुभव करने के लिए बाबा ने कहे महा-वाक्यों को याद करना चाहिए.

- बाबा पूछते है - सारे विश्व का बाप, सभी आत्माओं का बाप तुम बच्चों को पढ़ा रहे है. इतना तुम्हारे दिमाग में बैठता है? क्योंकि दिमाग है तमोप्रधान, लोहे का बर्तन, आयरन एजड. दिमाग आत्मा में होता है. तो इतना तुम्हारे दिमाग में बैठता है? ☺

- इस समय सारी बेहद की सृष्टि को दोजक कहा जाता है. तो बाबा तुम्हें पूछते है - क्या यह समझते हो गरीब दोजक में है बाकी सन्यासी, साहूकार, बड़े मर्तबे वाले बहिश्त में है? बाबा समझाते है अभी तो सब आत्माये दोजक में है. ☺

- विश्व की सर्व आत्माओं का बाप तुम्हारे सन्मुख बैठ तुमको पढ़ा रहे है. बाप पूछते है - सारा दिन तुम्हारी बुद्धि में यह याद रहता है की बरोबर बाबा हमारे साथ है? कितना समय बैठता है? घण्टा, आधा घण्टा या सारा दिन? यह दिमाग में रखने की भी ताकत चाहिए. ☺

- बाबा बच्चों को पूछते है - तो यह दिमाग में आता है कि बेहद का बाप हमको नई दुनिया का मालिक बनाने हमको लायक बना रहे है? दिल में इतना अपने को लायक समझते हो कि हम सारे विश्व के मालिक बनने वाले है? इससे जास्ती तो खुशी का खजाना कोई मिल सकता नहीं. ☺

- यह देवताये भारत में ही होकर गये है. यह तो सारे विश्व का मालिक बनने वाले है. तो अपने से पूछो - इतना दिमाग में है? वह चलन है? वह बात-चित करने का ढंग है? वह दिमाग है? यहॉ तुम हाथ उठाते हो परन्तु तुम्हारी ऐसी चलन है? बाप तुमको पढ़ाते है यह दिमाग में जोर से बैठता है? बाबा जानता है बहुतो का नशा सोडावोटर हो जाता है. ☺

- यहॉ तो सब है रावण सम्प्रदाय. कथा है ना - राम ने बंदरो की सेना ली. फिर यह-यह किया. अभी तुम समझ रहे हो बाबा ने रावण पर जित पहनाकर तुमको लक्ष्मी-नारायण जैसा बना रहे है. तुम भी समझते हो कि इस ईश्वरीय पढ़ाई से हम यह बनेंगे. ☺

- बाप तुम्हें सारी दुनिया का चक्र समझाते है. हाथ में कोई पुस्तक नहीं है, ऑरली ही समझाते है. ☺

- बाप तुम्हें रोज-रोज समझाते है नशा चड़ाने के लिए. परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो समझते है वह सर्विस में लग जाते हैं तो ताजे रहते हैं. नहीं तो बासी हो जाते हैं. ☺

- सारे सृष्टि को पलटाने वाला, रिज्युनेट करने वाला अर्थात नर्क को स्वर्ग बनाने वाला बाप हमको पढ़ा रहे हैं. यह नशा रहे तो सदा खुशी रहेंगी. ☺

- बाबा कहते है - घर में कभी रोना पिटना नहीं है. यहॉ तुमको देवी-गुण धारण करने है. ☺

- भगवान समझाते हैं मेरी ग्लानि करते हैं, मैं तुमको देवता बनाता हूँ मेरी कितनी ग्लानि की है फिर देवताओं की भी ग्लानि कर दी है इतने मूढमति मनुष्य बन पड़े है. कहते है भज गोविन्द.....बाप कहते हैं - हे मूढमति, गोविन्द-गोविन्द, राम-राम कहते बुद्धि में कुछ आता है कि हम किसको भजते है? पथ्थरबुद्धि को मूढमति ही कहेंगे. ☺

- कृष्ण के साथ तुम्हारी प्रीत तो है. कृष्ण के लिए सबसे जास्ती व्रत, नेम आदि कुमारीया, मातायें रखती हैं. निर्जल रहती हैं. कृष्णपुरी अर्थात सतयुग में जाये. परन्तु ज्ञान नहीं है इसलिए बड़ा हठ आदि करते हैं. तुम भी इतना करते हो, कोई को सुनाने के लिए नहीं, खुद कृष्णपुरी में जाने के लिए. ☺

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:31-10-14

विश्व की सर्व आत्माओं को मुक्ति और जिवनमुक्ति देने वाले बेहद के बाप ने कहा, "मीठे बच्चे - बाप की एक नजर मिलने से विश्व के मनुष्य-मात्र निहाल हो जाते हैं, इसलिए कहा जाता है नजर से निहाल....."

हम सब के मिठे-मिठे, प्यारे-प्यारे शिवबाबा ने बताया है कि उन्हें हम बच्चों को ज्ञान देने के लिए प्रकृति का सहारा लेना पड़ता हैं इसलिए वह ब्रह्मा का तन बहुत थोड़े टाइम के लिए लोन पर लेते हैं. लेकिन वह ब्रह्मा के तन की दो कर्मेन्दियों, मुख और आँख का ही उपयोग करते है. इसलिए जब कोई भी नया धारणा युक्त आत्मा को बाप के सामने लाते है, तो उन्हें बताते थे कि बाबा को पहचान ना है तो उनकी दृष्टि जरूर लो. साथ में उनके मुख से निकले महान महा-वाक्यों को भी सूनों. क्योंकि बाबा कि दृष्टि से आत्मा को रुहानी प्यार मिलता है और महान-वाक्यों को सुनकर आत्मा को अतीन्द्रिय सुख मिलता हैं. आत्मा तृप्त हो जाती हैं. खुशी से भरपूर हो जाती हैं. बाबा की दृष्टि से ही आत्मा को मुक्ति-जिवनमुक्ति का वरदान मिल जाता है इसलिए कहा जाता है नजरों से निहाल.

यह तो हम सब जानते है कि बाबा आया है विश्व की सर्व आत्माओं को सतोप्रधान बनाकर अपने घर ले जाने के लिए और इस धरती पर सुख-शांति की दुनिया, सतयुग की स्थापना करने के लिए. बाबा ने हम बच्चों (आत्माओं) को यह भी समझाया है कि हमारी आत्मा जो तमोप्रधान बन गई है उसे एक बाप की याद से ही सतोप्रधान बना सकते है, क्योंकि बाप ही सर्व मनुष्य आत्माओं का पिता है और पतित-पावन (प्योरीफायर) भी हैं.

बाबा हमें हर रोज अपने महा-वाक्यों से अलग-अलग युक्तियां ही बतलाते है कि हम आत्माये कैसे उस परमात्मा को याद कर सकती हैं जिसे की आत्मा फिर से दिव्य-गुणों और शक्तिओं से भरपूर हो जाये, सम्पूर्ण पवित्र और सतोप्रधान बन जाये. आज भी बाबा ने एक और युक्ति से बाप को याद करना सिखलाते हुए कहा, इतना याद रखो कि "अब हमें अपने घर जाना है फिर सतयुग में आना हैं." इसके लिए आत्मा को निर्मोही और सारी दुनिया से वैराग्य दिलाना भी जरूरी हैं. आत्मा निर्मोही बन जाये इसके लिए याद रखो कि "हम आत्मा अकेले आई थी, फिर अकेले जाना हैं." सब बातों से आत्मा को वैराग्य आ जाये इसके लिए याद रखो कि "हम आत्मा खाली हाथ आई थी, फिर खाली हाथ जाना हैं."

बाबा की याद हम आत्माओं को पक्की हो जाये इसके लिए आज की मुरली से निकाले गये कुछ महा-वाक्यों -

- बाबा ने कहा - यहाँ तो बाप बैठे है, इनकी तो सारी दुनिया की जो भी मनुष्य आत्माये हैं सब तरफ नजर जाती है. जानते है सबको मुझे वर्सा देना है. भल बैठे यहाँ है पर नजर सारे विश्व पर और सारे विश्व के मनुष्य मात्र पर है क्योंकि सारे विश्व को ही निहाल करना होता हैं.

- बाप समझाते हैं यह पुरुषोत्तम संगमयुग है. तुम जानते हो बाबा आया हुआ है सबको शांतिधाम, सुखधाम ले जाने. सब निहाल हो जाने वाले है.

- बाबा कहते है - ड्रामा प्लेन अनुसार सबको वापस जाना है क्योंकि नाटक पूरा होता है. अब नई दुनिया स्थापन होनी हैं. अब तुम्हारी बुद्धि में है - बाबा आया हुआ है. पैरेडाइज स्थापन होगा और हम शांतिधाम में चले जायेंगे. सबकी गति होगी और तुम्हारी सद्गति होगी.

- बाबा कहते है - अब तुम बच्चों को अन्दर में बड़ी खुशी होनी चाहिए. बाबा आया हुआ है, यह पुरानी दुनिया तो जरूर बदलेगी. तुम बच्चों को याद है – अभी हम जाते है सुखधाम.

- यह याद रहना चाहिए अभी हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं, हम नई दुनिया में जाने वाले हैं. यह याद रहे तो भी तुमको बाप की याद रहेगी.

- बाप कहते है यह नॉलेज जो मैं अभी तुमको देता हूँ कल्प बाद फिर मैं ही आकर दूँगा. यह नई दुनिया के लिए नया ज्ञान है. यह ज्ञान बुद्धि में रहने से खुशी बहुत होती है दूसरे तरफ फिर फिल भी होता है. अरे, ऐसा मिठा बाबा हम फिर कल्प बाद देखेंगे.

- बाप आते ही हैं - शांतिधाम-सुखधाम में ले जाने. तुम शांतिधाम-सुखधाम को याद करों तो बाप भी याद आयेगा.

- बाप कहते है - तुम्हें पुरानी दुनिया से ममत्व निकाल देना है. सुखधाम को बुद्धि से याद करना है तो खुशी भी रहेगी. खुशी-खुशी यह शरीर छोड़ देंगे. फिर नया शरीर लेकर सतोप्रधान दुनिया में आयेंगे.

ॐ शांति.